समावेशी शिक्षा

सामान्य कक्षाओं के अंतर्गत विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों की सार्थक शिक्षा

विश्वास स्वाध्ययन पुस्तिका

विश्वास
vishwas

bharti
Bharti Foundation

यह परियोजना भारती फाउंडेशन के सहयोग से विकसित की गई है।

यह स्वाध्ययन सामग्री "समावेशी शिक्षा -सामान्य कक्षाओं में विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों की सार्थक शिक्षा" परियोजना के तहत प्रसाधन का एक हिस्सा है । इस परियोजना को रूप देने का कार्य विश्वास टीम ने हरियाणा राज्य शिक्षा विभाग के साथ मिलकर किया है।

यह पुस्तिका सामान्य शिक्षकों के लिए तैयार की गई है परन्तु समावेशी शिक्षा में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति इसे इस्तेमाल कर सकता है ।

पुस्तिका में दी गई जानकारी गैर वाणिज्यिक प्रयोजनों (non commercial use) के लिए इस्तेमाल की जा सकती है । 'समावेशी शिक्षा पुस्तिका' विश्वास वेबसाइट से डाउनलोड भी की जा सकती है : www.vishwasindia.org । पुस्तिका इस्तेमाल करने से पहले विश्वास संस्था को ज़रूर सूचित करें (vishwas.nj@gmail.com)

bharti
Bharti Foundation

यह परियोजना भारती फाउंडेशन के सहयोग से विकसित की गई है । इस प्रकाशन में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण विश्वास के हैं तथा यह ज़रूरी नहीं है कि भारती फाउंडेशन उनको प्रतिबिंबित करते हों।

इस स्वाध्ययन सामग्री का विकास और रूपांकन विश्वास,
गुड़गाँव में किया गया है

विश्वास
vishwas
Vision for Health Welfare and Special Needs

2014 प्रथम प्रकाशन

लेखिका: कंवल सिंह

संपादकीय टीम: गीता चतुर्वेदी
रुचि सिंह
प्रज्ञा सिंह
फ़ोटोग्राफ़्स: अजीत सिन्हा
चित्रण: रुचि गुप्ता

स्वाध्ययन सामग्री और पुस्तिका की तैयारी में योगदान के लिए धन्यवाद :
पुस्तिका स्वरूपण: गौरी अरुणदती
फिल्म: अंशु गंगवाल
फ़ोटोग्राफ़्स: हरित बजाज
व
विश्वास टीम: छात्र, अभिभावक और स्टाफ

यह स्वाध्ययन सामग्री विश्वास टीम द्वारा तैयार की गयी समावेशी शिक्षा में उनके चार वर्षों के अनुभवों और अभ्यास का सार है। यह उन गिने चुने समावेशी शिक्षा में उपलब्ध प्रसाधनों में से एक है जो भारतीय संदर्भ को ध्यान में रखते हुए तैयार की गयी है । सामग्री हिंदी में तैयार की गयी है । कठिन मेडिकल और तकनीकी शब्दों के स्थान पर सरल लेकिन प्रभावी भाषा उपयोग करने का एक सचेत प्रयास किया गया है ।

<u>प्रसाधन में निम्नलिखित सामग्री शामिल है –</u>

- स्वाधय्यन पुस्तिका (1)
- **DVD** जिसमें 4 लघु फिल्में शामिल हैं (1)
- समावेशी शिक्षा पोस्टर (5)
- शिक्षण अधिगम सामग्री

- कक्षा में प्रदर्शन/ के लिए फ़्लैश कार्ड(76)

- दृश्य सारिणी के लिए फ़्लैश कार्ड (12)

- कक्षा में संचार के लिए फ़्लैश कार्ड (12)

- सांकेतिक भाषा में अंग्रेज़ी अक्षर व अंक (2)
- ब्रेल में अंग्रेज़ी अक्षर व अंक (2)
- वर्ण व Alphabet Chart (2)
- पूर्व साक्षरता के स्तर पर छात्रों के लिए कार्यपत्रक के नमूने (2)

इन्द्रधनुष के रंग हैं हम
ना कोई ज्यादा ना कोई कम
जुदा हैं हम सभी के ढंग
फिर भी मिलकर पढ़ते हम

संदेश:प्रज्ञा सिंह

विश्वास एक गैर लाभकारी संस्था है जो विकलांगता और विकास के क्षेत्र में **2005** से गुड़गॉव ,हरियाणा में कार्यरत है। विश्वास का विज़न है 'ऐसा समावेशी समाज जहॉ हर व्यक्ति को भिन्नताओं के साथ समान अधिकार व अवसर गरिमापूर्ण तरीके से सुनिश्चित हों'। विश्वास ने इस विज़न को वास्तविक रूप देने के लिए एक छोटी सी शुरूआत 'विश्वास विद्यालय' के रूप में की। नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम **2009** आने के बावजूद भी अमूमन खास ज़रूरतों वाले बच्चे (CWSN) इस मौलिक अधिकार से वंचित हैं।यह तो एक स्थापित तथ्य है कि बच्चे विद्यालय से न सिर्फ किताबी ज्ञान बल्कि जीवन के बहुत ज़रूरी व्यावहारिक ज्ञान भी लेते हैं।उनके जीवन में संपूर्ण विकास के लिए खेलकूद, संगीत जैसी गतिविधियॉ तथा दोस्ती व आत्म सम्मान जैसे पहलुओं का महत्व है जो उन्हें सिर्फ घर पर रहकर नहीं मिल सकता।यह अनुभव एक विद्यार्थी के जीवन को मज़ेदार, अर्थपूर्ण और चुनौतीपूर्ण बनाते हैं।

जैसा कि हम सब जानते हैं, हमारा समाज लिंग, जाति ,योग्यता और आर्थिक स्थिति के आधार पर बॅटा हुआ है। इन्हीं में ऐसे बच्चे भी शामिल हैं जिनकी ज़रूरतें कुछ अलग तो हैं पर असंभव नहीं। एक समावेशी समाज के निर्माण के लिए समावेशी शिक्षा एक महत्वपूर्ण कदम है। इसी सोच को लेकर विश्वास और हरियाणा शिक्षा विभाग ने मिलकर स्वाध्ययन सामग्री बनाने का निश्चय किया।इस स्वाध्ययन सामग्री के माध्यम से हमने अपने अनुभवों का सार इस किट में डाला है।हम मानते हैं कि संस्थाओं की पहुँच सरकार की पहुँच के मुकाबले बहुत सीमित है।परंतु हम सब एक दूसरे के अनुभवों और संसाधनों को मिलाकर एक योग्य एवं प्रभावी टीम का निर्माण कर सकते हैं। अगर यह काम हम सब (माता पिता,शिक्षक एवं समुदाय) मिलकर करेंगें तो मुश्किलें आसान होंगी।जैसा कि हैलेन कैलर ने कहा है -

Alone we can do so little; together we can do so much

समावेशी समुदाय एक खूबसूरत बगीचे की तरह है जहॉ भांति - भांति के पेड़ पौधे फूलते और पनपते हैं तथा अपने रंग और रूप से बगीचे की सुंदरता बढ़ाते हैं। किसी को कम पानी चाहिए तो किसी को ज़्यादा। कोई बहुत धूप में खुश है तो कोई छाया चाहता है।बस हमें ऐसे ही बच्चों की विविधता और विभिन्नताओं को अपनाते हुए उन्हें प्यार से सींचना होगा।

हम श्रीमती सुरीना राजन जी, प्रधान सचिव शिक्षा विभाग हरियाणा के मार्गदर्शन के लिए अत्यंत आभारी हैं जिनके नेतृत्व में हम इस स्वाध्ययन सामग्री को रूप दे सके। साथ ही हम भारती फाउंडेशन को उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए धन्यवाद करते हैं।

हमारा मानना है 'करने से ही होना है , विश्वास है'

Neelam Jolly

(नीलम जॉली)

चेयरपर्सन, विश्वास

D.O. PS/PSSE-2014/1476

Principal Secretary to Government, Haryana
School Education Department.

Dated 02-04-2014

आमुख

प्रकृति ने नैसर्गिक रूप से इस दुनिया को समावेशी बनाया है। हां मनुष्य ने अपनी इच्छाओं, आकाक्षाओं और लक्ष्यों के दृष्टिगत अनेको प्रकार से सबकुछ वर्गीकृत कर दिया। जिस ढंग से समाज को बांटा गया–लिंग, समुदाय, धर्म, जाति या काम–काज के आधार पर.....उन सब में एक बहुत कठोर और ठोस वर्गीकरण किया गया शारीरिक व मानसिक क्षमताओ के आधार पर। इस विभाजन में कुछ लोगों को 'सामान्य' की श्रेणी में रखा गया व कुछ को 'अक्षम' की। 'अक्षम' की श्रेणी में आने वालों की संख्या बहुत कम थी और आवाज बहुत कमजोर। अपनी विशेष आवश्यकताओं के कारण न ही वे संगठित हो सकते थे, न किसी का बहिष्कार कर पाते। समाज ने उनकी विशेष आवश्यकतों के दृष्टिगत अपने 'सामान्य ढॉचे, संस्था या प्रक्रिया' में कुछ अलग प्रावधान नही किए। एक लंबे संघर्ष के बाद, मूर्त रूप से कई जगह यह प्रावधान नजर आने लगे हैं।

इन विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने का पहला कदम शिक्षा से शुरू होता है लेकिन शिक्षा जगत ने स्वंय को इस जिम्मेवारी से बहुत दूर कर लिया और इसके लिए एक अलग "विशेष शिक्षा प्रणाली" गठित कर दी। यह 'अलग शिक्षण प्रणाली' इन बच्चों को समाज की मुख्यधारा में कैसे और कब प्रविष्ट करा पाएगी–यह एक लंबी चर्चा की विषय रहा है।

अंततः 'शिक्षा का अधिकार' 2009–अधिनियम में यह प्रावधान किया गया है कि इन विशेष आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मुख्यधारा शिक्षा प्रणाली को ही स्वयं को सक्षम बनाना है। यह अक्षमता उस बच्चे की नहीं बल्कि शिक्षा प्रणाली की है यदि वह बच्चों की अलग–अलग तरह की सीखने की क्षमताओं के अनुरूप स्वयं को नहीं ढाल सकती। अब यह बड़ी चुनौती हमारे सामने है कि अपने सभी विद्यालयों व सभी शिक्षकों को हर प्रकार की क्षमता, हर प्रकार की विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थी के लिए कैसे तैयार करें।

इस उपलक्ष्य में 'विश्वास संस्था' व हरियाणा सरकार ने निर्णय लिया कि 'समावेशी शिक्षा' की दक्षता हर अध्यापक को देने के लिए 'स्वाध्ययन समाग्री' बनाई जाए। इस सांमग्री के माध्यम से कोशिश की गई है कि अध्यापक को उन सभी प्रश्नों के उत्तर मिल सकें, उन सभी शंकाओं का निराकरण हो सके जो अपनी समावेशी कक्षा को सफल बनाते हुए उसके सामने आएंगे। 'विश्वास संस्था' इस पहल के लिए बधाई की पात्र है। आशा है, यह प्रयास सफल होगा। यह पहला प्रारूप है और अध्यापकों के अनुभव व विचार–विमर्श के आधार पर इसे और बेहतर बनाया जाएगा।

(सुरीना राजन)
Surina Rajan, IAS

नमस्कार! 2009 में भारत ने शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक कदम उठाया जब बच्चों की नि: शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू किया गया । इस अधिनियम ने यह अनिवार्य कर दिया कि सभी बच्चे (विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों सहित), अपने पड़ोस के स्कूलों में जायें तथा अपनी उम्र के अनुसार कक्षाओं में शिक्षा प्राप्त करें । परिणामस्वरूप जो बच्चे स्कूलों से बाहर थे, अब उन छात्रों को अपने पड़ोसी स्कूलों में दाखिला मिलने का प्रावधान है । छात्र संख्या में वृद्धि हो रही है और अधिकांश स्कूल अपने शिक्षकों को बेहतर एव् समावेशी तरीकों के बारे में प्रशिक्षित करने के प्रयत्न कर रहे हैं।

आज, एक शिक्षक के रूप में आपसे कक्षा के भीतर बाकी छात्रों के साथ विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों को समावेशी तरीके लागू कर के पढ़ाने की उम्मीद की जा रही है । यह संभव है कि आपके पास विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के साथ काम करने का कोई अनुभव ना हो और मन में कई सवाल उठ रहे हों जो आपको परेशान व चिंतित करते हैं।

- समावेशी शिक्षा क्या है? समावेशी शिक्षा की क्यों आवश्यकता है?
- क्या विशेष ज़रूरतों वाले छात्र विशेष स्कूलों में बेहतर नहीं सीखते हैं?
- मुझे समावेशी शिक्षा के लिए कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है.. इन छात्रों के साथ मैं क्या करूँ?

ये सभी सवाल बिल्कुल उचित हैं। समावेशी शिक्षा वास्तविकता में संभव करने की ज़िम्मेदारी एकमात्र शिक्षकों की ही नहीं है। समावेशी शिक्षा को सफल बनाने के लिए शिक्षकों के साथ साथ बाकी संबंधित लोगों व एजेंसियों को भी अपने हिस्से की कार्य को पूरा करना होगा जैसे कि राज्य शिक्षा बोर्ड, राज्य परिषद् शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण स्कूल प्रबंधन समिति, प्रधान शिक्षक, ब्लॉक रिसोर्से टीचर, अभिभावक व अन्य एजेंसियाँ ।लेकिन साथ ही इसका मतलब यह नहीं है कि शिक्षक के रूप में आप अपनी कक्षा समावेशी बनाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते हैं । इस पुस्तिका व साथ दिये प्रसाधन के माध्यम से आप चुनौतियों का सामना करने की तैयारी कर सकते हैं । समावेशी शिक्षा के बारे में बुनियादी जानकारी प्राप्त कर के आप अपने दैनिक शिक्षण में कई समावेशी तरीकों को शामिल कर सकते हैं । पुस्तिका में भले ही विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के लिए सुझाव दिए गए हैं, लेकिन आप यह पायेंगे कि इन्हें लागू करने से अन्य छात्रों को भी लाभ मिलेगा । हमें पूरी उम्मीद है कि यह पुस्तिका आप जैसे उन सभी शिक्षकों के लिए एक उपयोगी संसाधन साबित होगी जिन्होनें अपनी कक्षा में विशेष ज़रूरतों सहित हर छात्र तक समावेशी शिक्षा का लाभ पहुचाने की चुनौती को स्वीकार किया है ।

समावेशी शिक्षा की ओर कदम बढ़ाने के लिए शुभकामनाएँ !

कंवल सिंह

(Kanwal Singh)
लेखिका एवं समन्वयक
विश्वास स्वाध्ययन सामग्री

विषय-सूची

भाग 1.समावेशी शिक्षा : समझें और जाने 1

1.1. समावेशी शिक्षा क्या है? 2

1.2. समावेशी शिक्षा क्या नहीं है 4

1.3. समावेशी शिक्षा की ज़रूरत क्यों है ? 6

1.4. क्या विशेष ज़रूरतों वाले छात्र सामान्य स्कूलों की तुलना में स्पेशल स्कूलों में बेहतर नहीं सीखते हैं 8

1.5. विशेष ज़रूरतों वाले छात्र (CWSN)- ज़िम्मेदारी किसकी ? 10

1.6. क्या मैं एक समावेशी शिक्षक बन सकता /सकती हूँ.....11

भाग 2.कक्षा में समावेशी वातावरण की स्थापना 13

2.1. समावेशी कक्षा का भौतिक वातावरण 14

2.2. कक्षा में समावेशी भावनात्मक वातावरण और माहौल 26

2.3. कक्षा में समावेशी सामाजिक वातावरण और माहौल.....29

भाग 3.छात्रों की विशेष ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए पढ़ाना 36

3.1. विशेष ज़रूरतों वाले छात्र कौन हैं ?.....36

3.2. समावेशी शिक्षा से सम्बंधित मौजूदा धारणाएँ और मान्यताएँ 38

3.3. शिक्षा सम्बंधी कुछ सामान्य बाधाएँ.....45

3.4. विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के सामने आने वाली बाधाएँ हटाने के लिये कदम..47

3.5. छात्रों के सामने आने वाली विकलांगता सम्बंधित जानकारी व बाधाओं को दूर करने के लिये उपाय और सुझाव.....51

3.6. समावेशी तरीके और प्रणालियाँ.....78

भाग 4.भिन्न शैक्षिक स्तरों का ध्यान रखते हुए पढ़ाना 85

4.1. शैक्षिक स्तर के अनुसार विभाजित करके पढ़ाना. 87

4.2. शैक्षिक स्तरों के हिसाब से भिन्न लक्ष्य व अपेक्षाएँ.....89

संलग्न 93

A. समावेशी शिक्षा के लिए स्कूल प्रबंधन समिति (SMC) की भूमिका 94

B. समावेशी दैनिक पाठ योजना लिखने के लिये फार्मेट/ फार्म.....97

C. बाधाओं को दूर करने के तरीके तय करने के लिए फार्मेट/ फार्म 98

D. 4 मार्च 2014 -पंचकुला में विश्वास स्वाध्ययन सामग्री पूर्वालोकन के समय प्रतिभागियों की सूची.....99

E. विश्वास स्टॉफ़:योगदानकर्ताओं की सूची 101

भाग 1. समावेशी शिक्षा : समझें और जानें

इस स्वाध्ययन पुस्तिका के पहले अध्याय में हम समावेशी शिक्षा से जुड़े अक्सर पूछे जाने वाले कुछ मौलिक सवालों पर चर्चा करेंगे:

1.1 समावेशी शिक्षा क्या है ?

1.2 समावेशी शिक्षा क्या नहीं है ?

1.3 समावेशी शिक्षा की ज़रूरत क्यों है ?

1.4 क्या विशेष ज़रूरतों वाले छात्र सामान्य स्कूलों की तुलना में स्पेशल स्कूलों में बेहतर नहीं सीखते हैं ?

1.5 विशेष ज़रूरतों वाले छात्र (CWSN)- ज़िम्मेदारी किसकी ?

1.6 मुझे समावेशी शिक्षा के लिए किसी प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है, क्या मैं एक समावेशी शिक्षक बन सकता /सकती हूँ ?

1.1 समावेशी शिक्षा क्या है ?

समावेशी शिक्षा कुछ बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित एक सोच/ दृष्टिकोण है :

सभी बच्चों को अपने पड़ोस के स्कूल में सार्थक शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है ।

स्कूली वातावरण ऐसा हो जहाँ सभी बच्चों का स्वागत व सम्मान हो और कोई भेद-भाव नहीं किया जाए ।

स्कूल में सभी छात्र उम्र के अनुसार कक्षा में भर्ती हों, न कि छात्र के शैक्षिक स्तर, विकलांगता या क्षमता के आधार पर

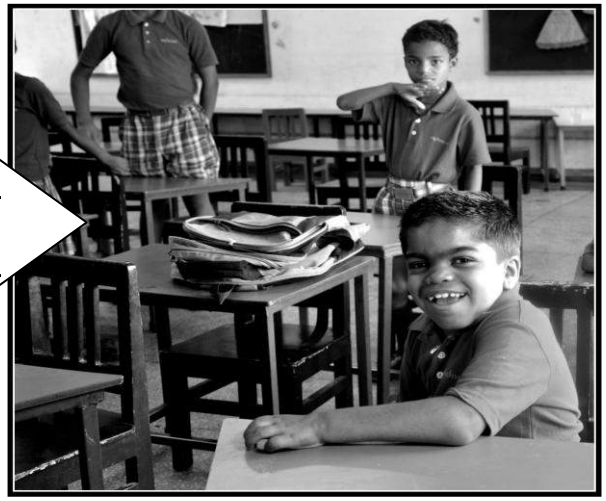

सभी बच्चों को विभिन्न स्कूली गतिविधियों में भाग लेने और सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए ।

सभी बच्चों को एक दूसरे के प्रति संवेदनशील और सहयोगी होने के लिये प्रोत्साहित किया जाए ।

छात्रों के सीखने -पढ़ने में आने वाली बाधाओं और विशेष ज़रूरतों पर ध्यान दिया जाए ताकि उनका प्रभावपूर्ण रूप से प्रबंधन हो ।

1.2 समावेशी शिक्षा क्या ***नहीं*** है ?

समावेशी शिक्षा के बुनियादी सिद्धांतों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के साथ साथ यह जानना भी ज़रूरी है कि समावेशी शिक्षा क्या ***नहीं*** है ।

विकलांगता के आधार पर अलग कक्षा में दाखिला करना समावेशी शिक्षा ***नहीं*** है ।

शैक्षिक स्तर के आधार पर छोटी कक्षा में दाखिला करना समावेशी शिक्षा ***नहीं*** है ।

विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को कक्षा में अलग बैठाकर अनदेखा करना समावेशी शिक्षा ***नहीं*** है ।

विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों को ज़रुरत से ज़्यादा मदद देना समावेशी शिक्षा ***नहीं*** है ।

विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों से भागीदारी तथा योगदान की उम्मीद ना करना समावेशी शिक्षा ***नहीं*** है ।

1.3 समावेशी शिक्षा की ज़रूरत क्यों है ?

समावेशी शिक्षा के बारे में यह प्रश्न अक्सर पूछे जाते है कि :

- इसकी क्यों ज़रूरत है ? विशेष ज़रूरतों वाले छात्र अच्छे भले स्पेशल स्कूलों में जा सकते हैं ।
- अब उन्हें सामान्य स्कूलों में जाकर सीखने के लिए क्यों कहा जा रहा है?

बच्चों की नि: शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम (RTE Act) के तहत समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित किया जा रहा है । ऐसा करने के कई कारण हैं । आइये इन कारणों के बारे में जानकारी हासिल करें :

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनेक पहलुओं पर सवाल उठाए गए । उसमें मौजूद भेद भाव, अलगाव और कठोरता की आलोचना की गई। इनके लिये पहल तो की गई परन्तु अभी भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में न केवल विशेष ज़रूरतों वाले बल्कि सामान्य छात्रों को भी कई बाधाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

पिछले कुछ सालों में शिक्षा के अर्थ तथा उद्देश्यों को लेकर हमारी सोच में बदलाव आया है । अब यह माना जाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है । स्कूल के पाठ्यक्रम में कई अन्य लक्ष्य है जिनको शामिल करने की तथा अधिक महत्व और जोर देने की आवश्यकता है । पढ़ाई के साथ साथ छात्रों को यह भी सीखना ज़रूरी है कि धर्म, लिंग, सामाजिक

वर्ग, क्षमताओं, भाषाओं, राज्यों, आर्थिक स्थितियों और संसाधन में विविधता होने के बावजूद सभी छात्र :

- एक दूसरे का सम्मान करना सीखें
- मतभेदों को सभ्य तरीक़े से दूर करना और स्वीकार करना सीखें
- अधिक सहनशील बनें और ज़रूरत पड़ने पर एक दूसरे का समर्थन करना सीखें
- अपने अधिकारों और ज़िम्मेदारियों को समझें
- अपनी सीखने की गति, ज़रूरतों और क्षमताओं के अनुसार शिक्षा हासिल करें

शिक्षा का परम उद्देश्य यह है कि हर छात्र आगे जाकर एक ज़िम्मेदार नागरिक बने और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में योगदान दे सके। यह परम उद्देश्य आजकल चल रही विभाजित तथा कड़ी शिक्षा प्रणाली में पूरा नहीं हो सकता । ऊपर लिखे उद्देश्यों को सफल करने में समावेशी शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । समावेशी शिक्षा के तरीके एक प्रभावपूर्ण ज़रिया है जो न केवल विकलांग छात्रों के लिए बल्कि सामान्य छात्रों के लिए भी फ़ायदेमंद होंगे । यह भी माना जा रहा है कि समावेशी शिक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव के लिए उत्प्रेरक है।

1.4. क्या विशेष ज़रूरतों वाले छात्र सामान्य स्कूलों की तुलना में स्पेशल स्कूलों में बेहतर नहीं सीखते हैं ?

यह बात अक्सर दोहराई जाती है कि विशेष ज़रूरतों वाले छात्र स्पेशल स्कूलों में बेहतर सीखेंगे क्योंकि वहाँ सभी स्पेशल शिक्षक होते हैं । फिज़ियोथेरेपिस्ट (Physiotherapist) एवं सहायक उपकरण (Assistive aids and devices) आसानी से उपलब्ध होते हैं और कक्षा में कम छात्र होने से उनपर अधिक ध्यान दिया जा सकता है । लेकिन साथ में हमारा यह जानना भी ज़रूरी है कि स्पेशल स्कूल छात्रों की क्षमता को पूरी तरह से साकार करने के लिये पर्याप्त नहीं है। स्पेशल स्कूलों में छात्र कई आवश्यक अनुभवों और अवसरों से वंचित रह जाते हैं । उदाहरण के लिये-

- विशेष स्कूल जाने वाले छात्र अपनी उम्र के छात्रों के साथ समय बिताने, घुलने मिलने, खेलने, पढ़ने और आपस में स्वस्थ सामाजिक रिश्ते बनाने से वंचित रह जाते हैं, जो कि शिक्षा के उद्देश्यों में से एक है।
- विशेष स्कूलों में जाने वाले छात्रों का संपर्क ज्यादातर दूसरे विकलांग छात्रों तक ही सीमित रह जाता है । उन्हें बाकी सभी छात्रों के साथ दिनचर्या की गतिविधियों में शामिल होकर सीखने का मौका नहीं मिलता ।
- कई विशेष स्कूलों में जाने वाले छात्रों को स्कूल के अलावा घर से बाहर जाने का मौका नहीं मिलता । इसके कई कारण हो

सकते हैं जैसे कि बाहर ले जाने के सीमित संसाधन या विकलांगता के प्रति लोगों का नकारात्मक रवैया । परिणामस्वरूप ये छात्र अपने पड़ोसी समुदाय में होने वाली गतिविधियों में भाग लेने से वंचित रह जाते हैं ।

एक सामान्य स्कूल में शायद स्पेशल टीचर और स्पेशल ट्रेनिंग ना हो । लेकिन एक सामान्य स्कूल में प्रतिदिन बाकी बच्चों के साथ सीखने के कई ऐसे अवसर और लाभ होते हैं जो स्पेशल स्कूलों में नहीं मिल सकते । जैसे-उम्र के उपयुक्त कक्षा, सहपाठी,दोस्त बनाने की चुनौतियाँ और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा । इसलिए यह कहना सही नहीं होगा कि विशेष ज़रूरतों वाले बच्चे सामान्य स्कूलों की तुलना में स्पेशल स्कूलों में बेहतर सीखते हैं ।

1.5 विशेष ज़रूरतों वाले छात्र (CWSN)- ज़िम्मेदारी किसकी ?

सबसे पहले यह जानकारी देना ज़रूरी है कि समावेशी शिक्षा केवल विकलांग छात्रों के लिए ही सीमित नहीं है । यह सच है कि समावेशी शिक्षा की शुरुआत विकलांग छात्रों से हुई थी । लेकिन कुछ समय के बाद इसके दायरे में विस्तार किया गया और अलगाव, भेदभाव एवं उपेक्षा का सामना कर रहे सभी छात्रों को उस में शामिल किया गया- जैसे कि प्रवासी परिवारों के बच्चे, बाल श्रमिक, अनुसूचित जाति (SC), आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग तथा अन्य पिछड़ी जातियाँ । समावेशी तरीकों का पालन करने वाले स्कूलों के अनुभवों ने दिखाया है कि समावेशी शिक्षा प्रणाली उपयोगी व प्रगतिशील है जो कि कक्षा में सभी छात्रों के लिए लाभदायक है। आज समावेशी शिक्षा विकलांग छात्रों तक ही सीमित नहीं - उसे एक प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली के रूप में देखा जा रहा है और कक्षा के सभी छात्रों के लिए उपयोगी होगी ।

दूसरी बात, विकलांग छात्रों सहित कक्षा में सभी छात्रों की ज़िम्मेदारी स्कूल के शिक्षकों की होती है । ब्लॉक रिसोर्स टीचर (BRT) का काम अन्य शिक्षकों के साथ मिलकर छात्रों के सामने आ रही कठिनाइयों को समझना और उन्हें दूर करने के लिये तरीके खोजना है जो समावेशी हों, रचनात्मक हों और जिन्हें लागू करना संभव हो । साथ में यह स्पष्ट करना भी ज़रूरी है कि विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों को सामान्य स्कूलों में शामिल किए जाने की ज़िम्मेदारी एकमात्र शिक्षकों की ही नहीं है । समावेशी शिक्षा पूरी तरह से तब सफल होगी जब शिक्षकों के साथ-साथ बाकी संबंधित लोग अपने हिस्से की ज़िम्मेदारियों को पूरा करेंगे।

1.6 बिना कोई विशेष प्रशिक्षण के मैं एक समावेशी शिक्षक कैसे बन सकता/ सकती हूँ ?

मुझे समावेशी शिक्षा के लिए किसी प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है.. मैं इन छात्रों के साथ क्या करूँ ?" यह प्रश्न हर शिक्षक के दिमाग में आता है जब वह समावेशी शिक्षा और विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के बारे में सुनते हैं ।

समावेशी शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि सामान्य अध्यापकों को BRT या स्पेशल एजुकेटर का काम करना है। सामान्य शिक्षकों से विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के लिए किसी प्रकार के औपचारिक मूल्यांकन करने की, थेरेपी या इलाज करने की या विस्तृत व्यक्तिगत शिक्षा योजना (IEP-Individual education plan) तैयार करने कि उम्मीद नहीं की जाती । लेकिन हाँ, उनसे यह आशा ज़रूर की जाती है कि वे कुछ सरल समावेशी तरीकों के बारे में पढ़े, जानकारी हासिल करें और इस्तेमाल करें ।

सामान्य शिक्षकों के पास 50 छात्रों को एक साथ संभालते हुए पढ़ाने का प्रशिक्षण व बहुमूल्य अनुभव पहले से ही होता है । अपने मौजूदा कौशल और अनुभवों के साथ नए ज्ञान का गठबंधन कर के वे समावेशी शिक्षा की शुरुआत कर सकते हैं । स्पेशल ट्रेनिंग का न होना सामान्य शिक्षकों को समावेशी शिक्षक बनने से नहीं रोक सकता ।

एक समावेशी शिक्षक बनने के लिये सामान्य शिक्षक निम्नलिखित कदम उठा सकते हैं:

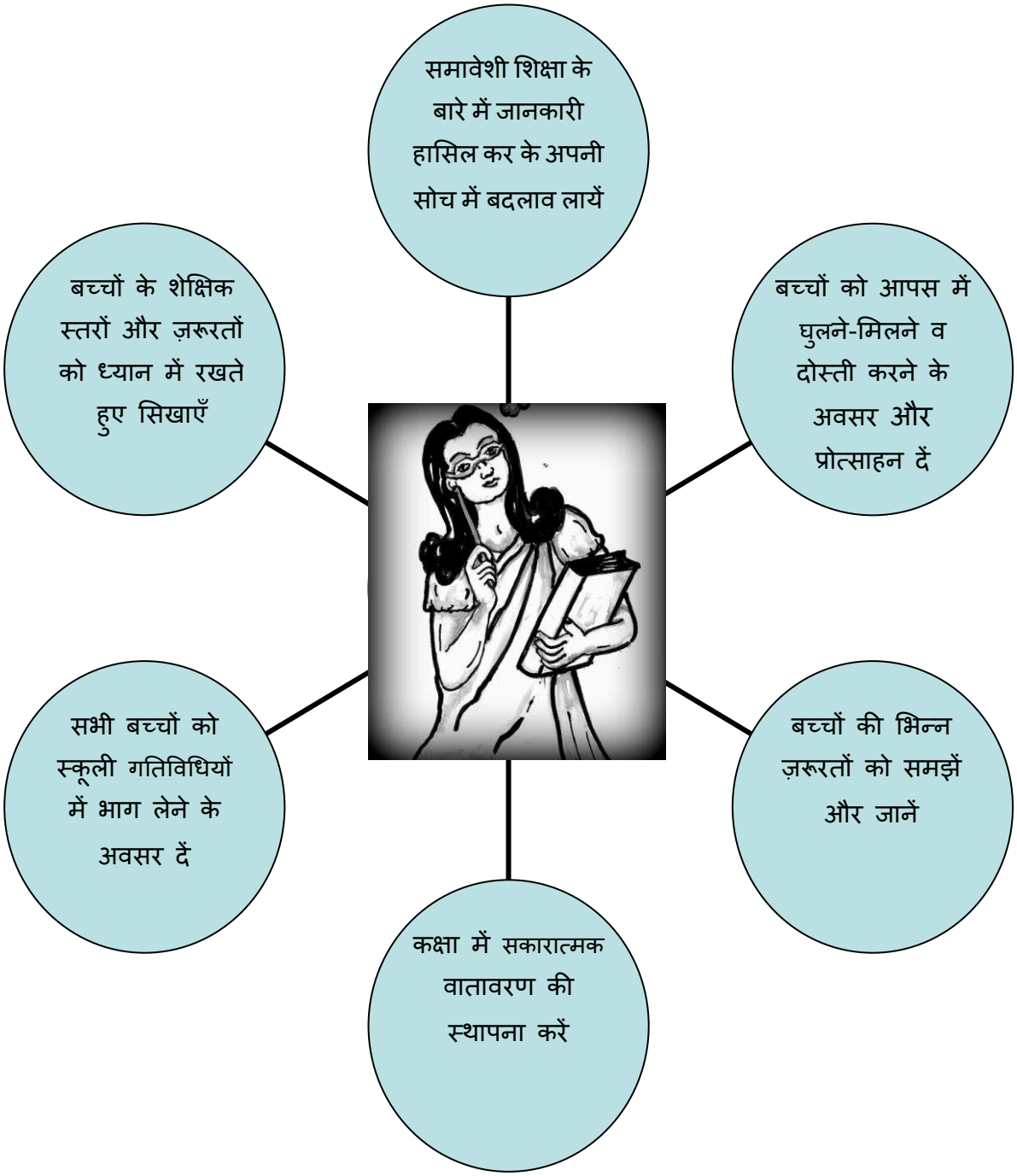

भाग 2. कक्षा में समावेशी वातावरण की स्थापना

जब सभी छात्रों की सुरक्षा व ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए कक्षा को आयोजित किया जाता है उसे समावेशी वातावरण कहते हैं । कक्षा में समावेशी वातावरण स्थापित करने के लिए तीन मुख्य पहलुओं पर ध्यान देना ज़रूरी है:

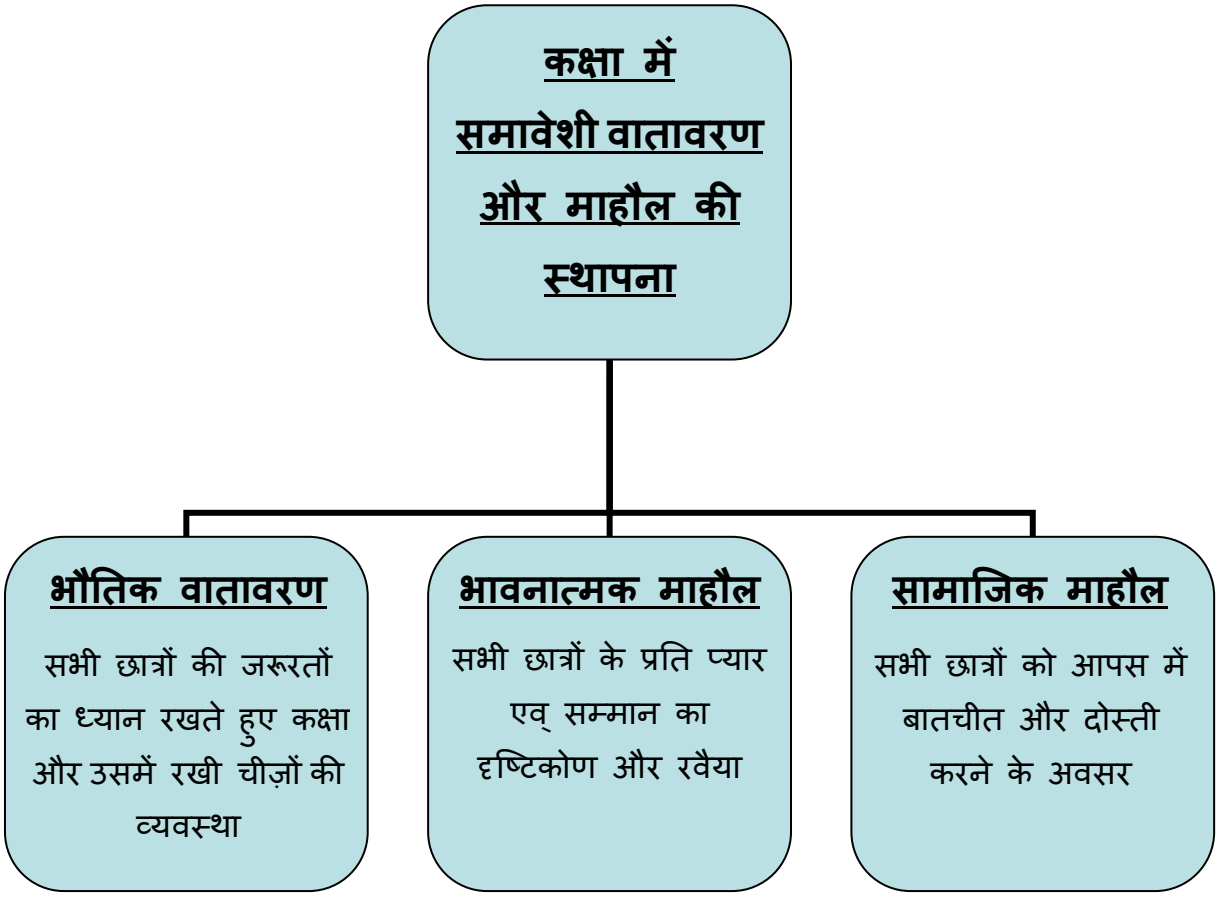

2. 1. समावेशी कक्षा का भौतिक वातावरण

कक्षा और उसमें रखी चीज़ों की व्यवस्था व आयोजन को भौतिक वातावरण कहा जाता है । इसमें शामिल हैं :

- कक्षा की स्थिति और हालत
- छात्रों के बैठने की व्यवस्था
- शिक्षण सामग्री

सामान्य शिक्षक कक्षा में छोटे-छोटे बदलाव लाकर कक्षा को एक सुरक्षित और समावेशी स्थान बना सकती / सकता है । प्रस्तुत हैं कुछ ऐसे सुझाव जो शिक्षक अपनी कक्षाओं में लागू कर सकते हैं । इन्हें लागू करने के लिये स्पेशल/ विशेष प्रशिक्षण या महँगे संसाधनों की ज़रूरत नहीं है हाँ -ज़रूरत है तो एक सकारात्मक दृष्टिकोण और रवैये की ।

1. कक्षा की स्थिति और हालत

हम सभी जानते हैं कि एक आदर्श कक्षा कैसी होनी चाहिये । कक्षा में पर्याप्त जगह और उचित बैठने की व्यवस्था होनी चाहिये । कक्षा अच्छी तरह से रोशन, हवादार ,साफ, सुरक्षित और शांत वातावरण में होनी चाहिए। लेकिन वास्तविकता में अधिकतर कक्षाएँ इस तरह नहीं मिलतीं । कुछ स्कूलों में सभी छात्रों के बैठने के लिए पर्याप्त जगह नहीं होती और छात्रों को बरामदा, आंगन या खेल के मैदान में बैठना पड़ता है । कई बार एक ही कमरे में एक से अधिक कक्षा के छात्रों को बैठना पड़ता है । इसके अलावा बहुत सी अन्य समस्याओं का सामना

करना पड़ता है जैसे कि बिजली का ना होना,शोर, टूटे दरवाज़े और खिड़कियाँ एवं छात्रों के लिए उपयुक्त फर्नीचर का उपलब्ध न होना।

कक्षाओं की मौजूदा हालत और सीमित संसाधनों के बावजूद शिक्षक अपनी कक्षाओं के भीतर साधारण परिवर्तन कर सकते हैं - भले ही नतीजा एक आदर्श स्थिति न हो फिर भी शिक्षक द्वारा प्रत्येक परिवर्तन समावेशी शिक्षा की दिशा में लिया गया एक सकारात्मक कदम होगा ।

- कक्षा में उपलब्ध स्थान का अधिकतम उपयोग करें - कक्षाओं का उपयोग गोदाम के रूप में नहीं करें । अनावश्यक फर्नीचर एवं खराब उपकरण और सामान हटा दें, जैसे व्यर्थ खराब कंप्यूटर, अलमारी जिसमें कक्षा नहीं बल्कि कार्यालय की सामग्री हो ।
- मौसम तथा रोशनी की ज़रूरत के हिसाब से छात्रों के बैठने की जगह में तबदीली करें ।

- कुछ विशेष ज़रूरतों वाले छात्र नुकसान या चोट लगने वाली चीज़ों से अनजान हो सकते हैं । खतरनाक और तेज़ चीज़े जैसे-टूटी हुई खिड़की के काँच के टुकडों और नुकीले ज़ंग लगी कीलें और लकड़ी के टुकड़े को कक्षा से हटा दें और कमरे को सभी छात्रों के लिये सुरक्षित करें ।
- छात्रों के आसपास शोर हो तो ध्यान देना मुश्किल हो जाता है । कई विशेष ज़रूरतों वाले छात्र शोर से बहुत परेशान भी हो जाते हैं । इससे बचने के लिये मैनेजमेंट और अन्य शिक्षकों के साथ मिलकर समय सारिणी में परिवर्तन करें - पढ़ाई का समय ऐसा रखें जब पड़ोसी कक्षा में शोर वाली गतिविधि न हो रही हो ।

इन परिवर्तनों से ना सिर्फ़ विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों को, बल्कि कक्षा में अन्य सभी छात्रों को भी लाभ मिलेगा ।

2. कक्षा में छात्रों की ज़रूरतों के अनुसार बैठने की व्यवस्था

- कक्षा में सामूहिक गतिविधियाँ करवाते समय छात्रों को अर्ध-चक्र आकार में या छोटे समूहों में बिठाना लाभदायक होगा।

- कोई नया विषय पढ़ाते समय ज़रूरी है कि छात्र इस तरह बैठें जिससे वह शिक्षक की बात ध्यानपूर्वक सुन सकें। ऐसी स्थिति में छात्रों को पंक्तियों में बैठने से फ़ायदा होगा।

- जिन छात्रों को सुनने में दिक्कत है वह देखकर सीखते हैं। आमतौर पर शिक्षक को कहा जाता है कि जिन छात्रों को कम सुनाई देता है उन्हें आगे बैठाएँ - लेकिन ऐसा करने से छात्र को उसके पीछे कक्षा में होने वाली गतिविधियों और कार्य का पता नहीं चलता । इसलिए यह ज़रूरी है कि उन्हें ऐसे स्थान पर बैठाया जाए जहाँ से वह शिक्षक और अन्य छात्रों को ठीक से देख सकें।

- अगर कक्षा में ऐसा छात्र है जिसे स्पष्ट रूप से देखने में कठिनाई हो तो जहाँ तक हो सके, कक्षा में छात्र के बैठने वाले स्थान में बार-बार बदलाव न करें ।
- अगर कक्षा में बदलाव करना आवश्यक है तो छात्रको पहले ही बताएं ताकि उसे जगह ढूँढने में परेशानी न हो ।
- छात्र के टेबल या कुर्सी पर एक स्पर्शनीय निशान लगा दें ताकि वह अपने स्थान पर बैठने में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो नाकि दूसरों पर निर्भर ।

- कक्षा में कुछ विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों को एक जगह पर लम्बे समय तक बैठने में कठिनाई आती है। ऐसी स्थिति में उन्हें कक्षा के बीच में छोटे-छोटे ब्रेक लेने की अनुमति दें ।

प्रारम्भ में अन्य छात्रों की एकाग्रता ज़रूर प्रभावित होती है । कुछ समय में उन्हे आदत पड़ जाती है और पढ़ाई के बीच कुछ छात्रों के उठकर घूमने के बावजूद भी वे पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करना सीख जाते हैं ।

- कक्षा में कुछ छात्रों को शारीरिक कठिनाइयों के कारण चलने व बैठने में अधिक समय लगता है - उन छात्रों को दरवाज़े के निकट बैठाएँ ताकि समय बचे और छात्र थके नहीं ।
- छात्र के उपकरण और सामान ऐसे स्थान पर रखें जिससे कक्षा में बाधा न आये ।

- कक्षा में कुछ छात्रों को शारीरिक कठिनाइयों के कारण बैठने के लिए सहारा या विशेष फर्नीचर -की ज़रूरत होती है -इस बात का ध्यान रखें कि छात्रों को उपकरणों एव् फर्नीचर के आधार पर बिल्कुल अलग बैठाने की बजाये बाकी छात्रों के साथ बैठाएँ ।

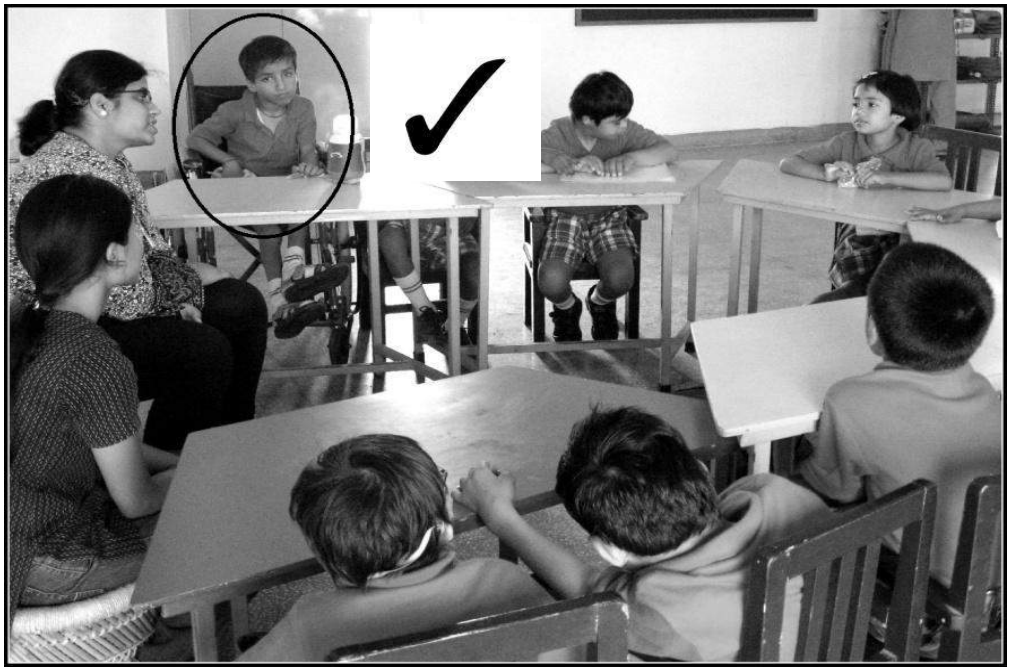

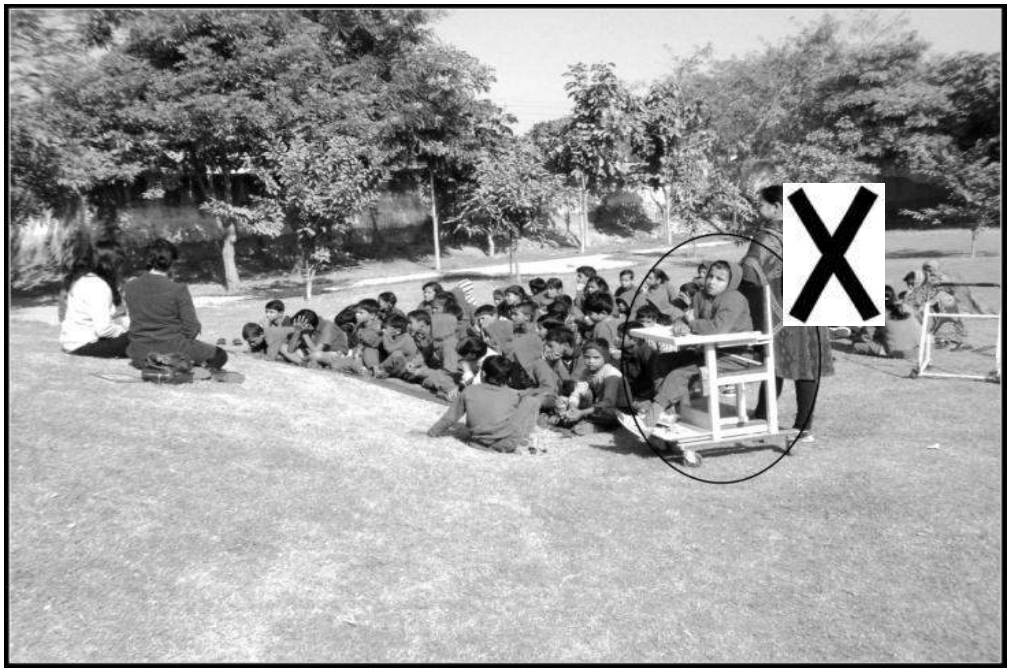

3. छात्रों की ज़रूरतों के अनुसार कक्षा में शिक्षण सामग्री का प्रदर्शन और उपयोग

- कक्षा में प्रदर्शित सामग्री छात्रों की आँख के स्तर पर लगायें जिससे छात्र उसे ठीक से देख सकें ।

- इस बात का ध्यान रखें कि प्रदर्शित सामग्री ऐसे माप की हो जो पीछे बैठे छात्रों से भी पढ़ी जा सके ।

- लिखित सामग्री को हमेशा चित्रों के साथ दर्शायें ताकि जो छात्र पढ़ नहीं सकते वह भी ठीक से समझ और सीख सकें।

- कक्षा में समय सारिणी को चित्रों के साथ दर्शायें ताकि सभी छात्रों को दिन की गतिविधियों तथा उनके क्रम के बारे में पता रहे।

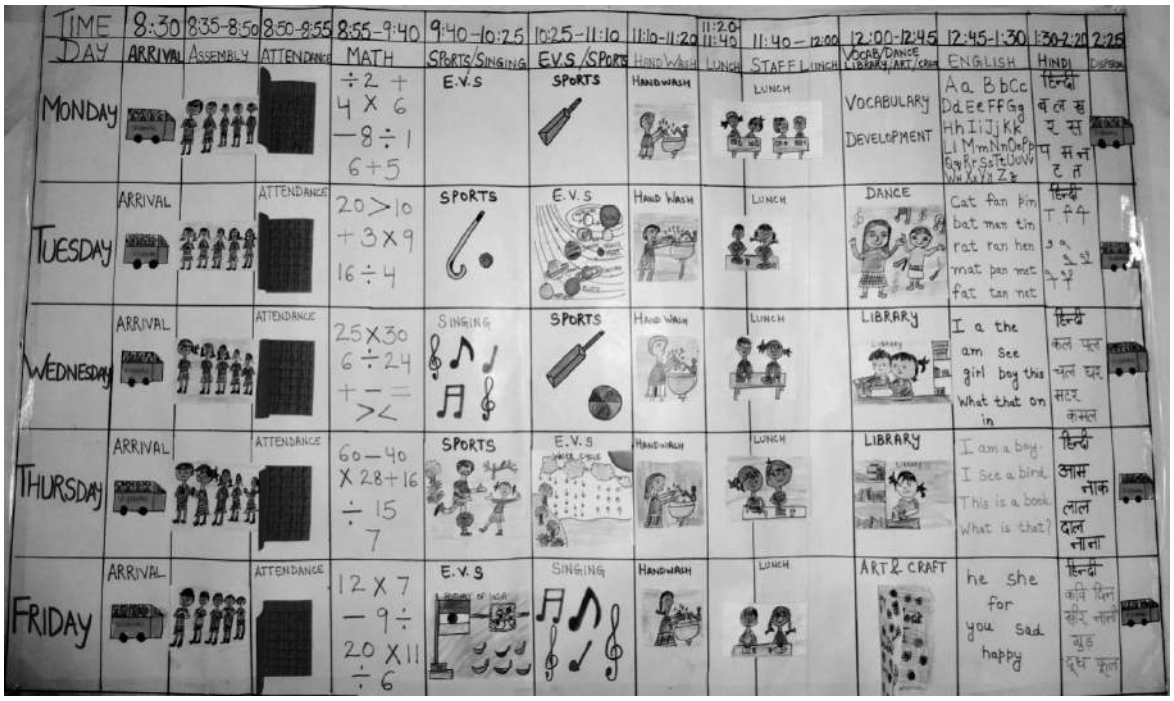

- समय सारिणी बनाने के लिए तस्वीरें स्वाध्ययन सामग्री में दी गई हैं ।

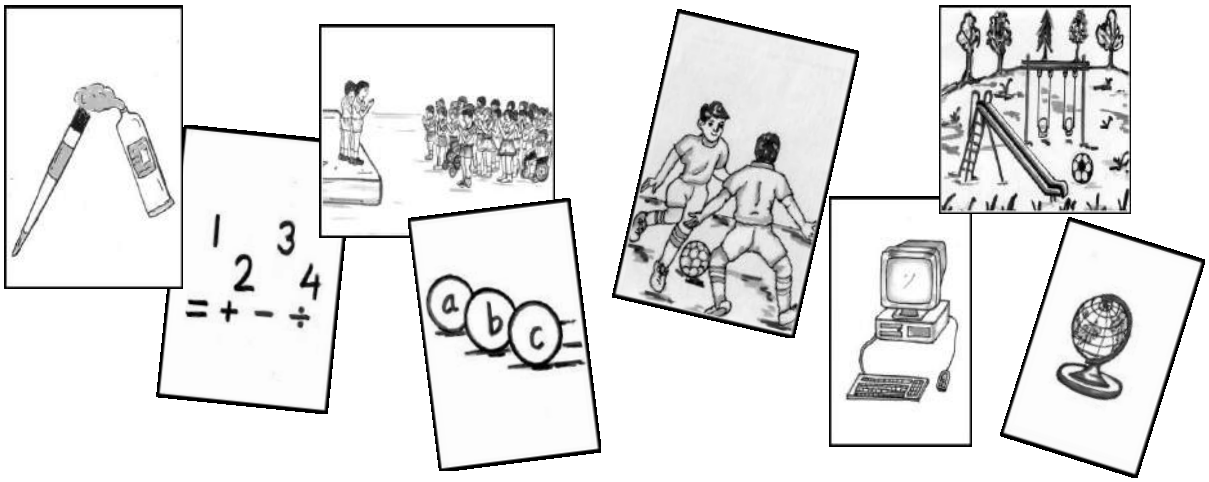

- कक्षा में बार-बार दिये जाने वाले निर्देशों को चित्रों द्वारा एक चार्ट में दर्शायें ताकि अध्यापक सभी छात्रों तक अपनी बात पहुँचा सकें ।

2.2. कक्षा में समावेशी भावनात्मक वातावरण और माहौल

समावेशी भावनात्मक वातावरण वह है जहाँ अध्यापक का सभी छात्रों के प्रति प्यार व सम्मान का दृष्टिकोण एवं सकारात्मकरवैया हो और लिंग, विकलांगता, राज्य, आर्थिक व सामाजिक स्थिति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं हो । आइये जानें कि एक सामान्य शिक्षक ऐसे कौन से कदम उठाकर अपनी कक्षा में ऐसा समावेशी वातावरण बनाने में सफल हो सकते हैं -

- सभी छात्रों के साथ आदर एव् सम्मान के साथ बात करें ।
- सभी छात्रों को उनके नाम से संबोधित करें, उनकी विकलांगता या अन्य लक्षणों से नहीं ।
- विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों से सीधे बात करें, अन्य छात्रों के माध्यम से नहीं ।

- विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों एवं कठिनाइयों का सामना करते हुए छात्रों को समस्या समझकर नज़रअंदाज़ न करें - उन्हें भी भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें ।

- अगर छात्र में कोई विकलांगता है तो यह ज़रूरी नहीं है की उसे मदद चाहिये। छात्र की तभी मदद करें जब उसकी ज़रूरत हो और छात्र की मर्ज़ी हो ।

- सभी छात्रों से सीखने एव् ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने की उम्मीद रखें- बेचारा समझ कर उनके लिये सारे काम ना करें या अन्य छात्रों से ना करवा दें।

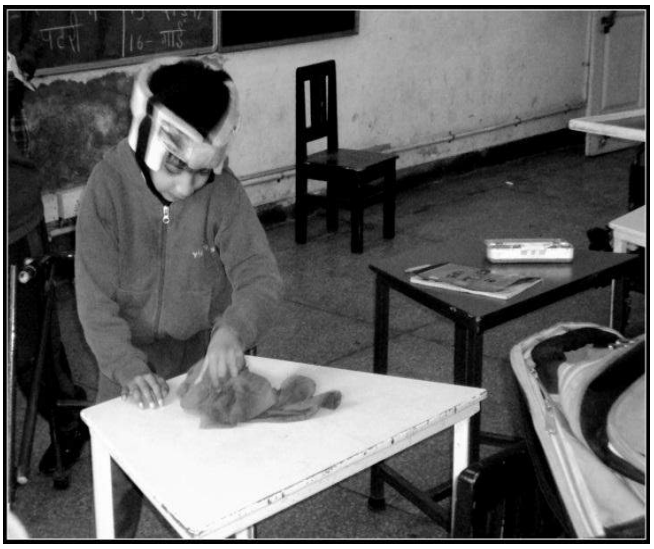

- कुछ छात्रों को कक्षा में अपनी बात व्यक्त करने में मुश्किल होती है- यह विकलांगता, अपरिचित भाषा या शर्मीले स्वभाव के कारण हो सकता है । इन्हें संचार के अन्य साधनों के माध्यम से अपनी बात समझाने का मौका,प्रोत्साहन और समय दें ।

अक्षर चार्ट का उपयोग

सांकेतिक भाषा का उपयोग

- विशेष ज़रूरतों वाले कुछ ऐसे छात्र भी हो सकते हैं जो कभी कभी एकदम से परेशान हो जातें हैं और चिल्लाना ,रोना या चक्कर लगाना शुरू कर देते हैं। उनपर चिल्लाने से वह और परेशान होंगे- आप ध्यान दें कि ऐसी क्या चीज़ या परिस्थिति होती है जिससे वह परेशान होते हैं और क्या करने से वह शांत होते हैं ।
- निर्देश का पालन न करने पर छात्र को डाँटने और सज़ा देने की बजाय कारण समझने की कोशिश करें । आप निर्देश में भी बदलाव ला सकते हैं ताकि छात्र उसे समझ सकें।

2. 2. कक्षा में समावेशी सामाजिक वातावरण और माहौल

समावेशी सामाजिक वातावरण उसे कहते हैं जब कक्षा में सभी छात्रों को अपने बीच भेद भाव हटाने और आपस में बातचीत तथा दोस्ती करने के लिये प्रोत्साहित किया जाये और अवसर आयोजित किए जायें । शिक्षक अपनी कक्षा में अलग-अलग गतिविधियों के अंतर्गत सामाजिक वातावरण को समावेशी बना सकते हैं । उदाहरण:

खेल के दौरान

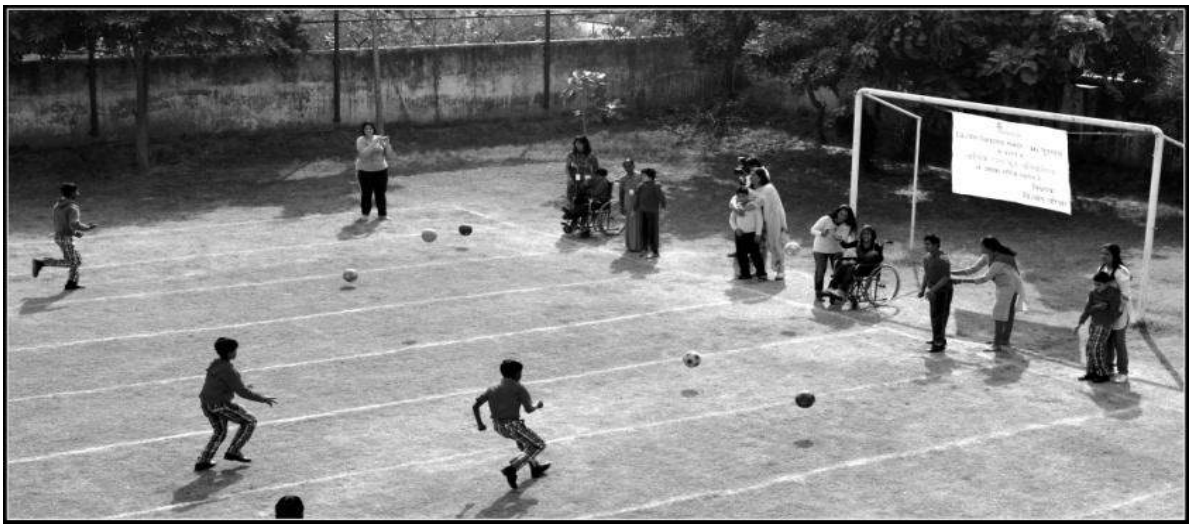

व्यायाम के समय

खाने और मध्यान्तर के दौरान

स्कूली गतिविधियों के दौरान

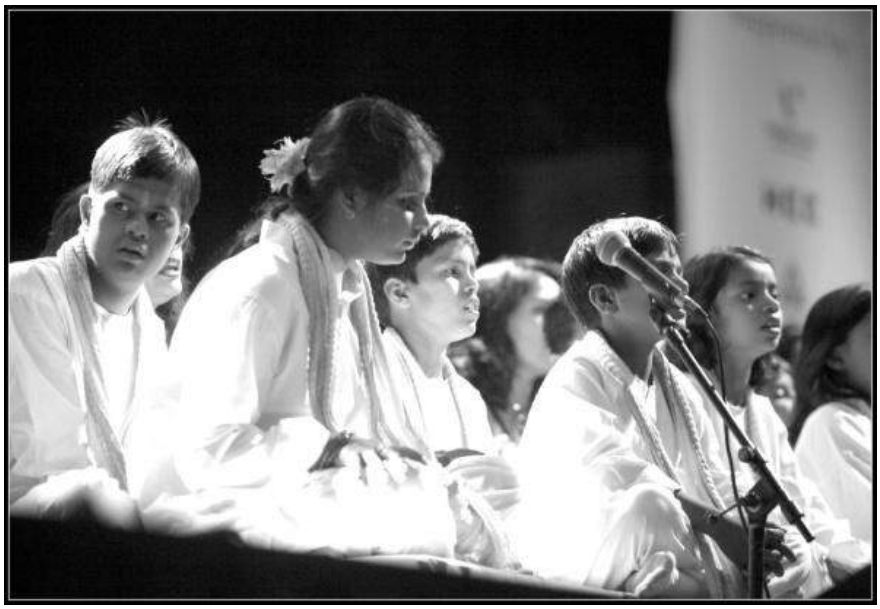

सह पाठयक्रम गतिविधियों के समय (संगीत, नृत्य, कला, नाटक)

शिक्षक छात्रों को एक दूसरे की विविधता, भिन्न अनुभवों और ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील होने के लिए और ज़रूरत पड़ने पर एक दूसरे की मदद करने के लिये प्रोत्साहित कर सकते हैं ।

परस्पर निर्भरता और उसके महत्व के बारे में छात्रों से बात करें- हर छात्र को किसी ना किसी कठिनाई या चुनौती का सामना करना पड़ता है- हाँ, कठिनाई या चुनौती का प्रकार और स्तर ज़रूर अलग हो सकता है। कुछ छात्रों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जबकि कुछ को भावनात्मक कठिनाइयों का । कुछ छात्रों को शारीरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है,जबकि कुछ को कक्षा में भाग लेने और सीखने का ।

उम्मीद है कि आपको कई ऐसे सुझाव मिले होंगे जिन्हें आप उपयोगी पायेंगे और छोटे-छोटे बदलाव लाकर आप अपनी कक्षा में समावेशी वातावरण स्थापित करेंगे ।

यह सुझाव लागू करने के लिये स्पेशल प्रशिक्षण या महंगे संसाधनों की ज़रूरत नहीं है। ज़रूरत है उत्साह और एक सकारात्मक दृष्टिकोण की।

शिक्षकों के लिए कार्य

प्रशिक्षण पुस्तिका के साथ मिली DVD में फिल्म 'कक्षा में समावेशी वातावरण की स्थापना' को ध्यान से देखें और बतायें कि अध्यापिका ने अपनी कक्षा में छात्रों की ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए क्या-क्या कदम उठाये जिससे एक समावेशी माहौल बन सका । फिल्म में दिखाई गयी अध्यापिका स्पेशल शिक्षक नहीं है बल्कि एक सामान्य शिक्षक है ।

फिल्म में शिक्षिका ने किन तरीकों का पालन किया?	✓ ✗	क्या यह तरीका समावेशी था? हाँ या नहीं
• प्रदर्शन सामग्री ऐसे माप की थी जिसे सभी छात्र ठीक से देख सकते थे		
• चित्रों के साथ स्पर्शनीय निशान का इस्तेमाल किया गया		
• शिक्षिका द्वारा चित्रों के साथ इशारे/ सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल किया गया		
• शारीरिक कठिनाइयों वाले छात्रों को विशेष फर्नीचर देकर अन्य छात्रों से अलग बैठाया गया		
• शारीरिक कठिनाइयों वाले छात्रों को बाकी छात्रों के साथ बैठाया गया		
• शारीरिक कठिनाइयों वाले छात्रों के उपकरण और सामान ऐसे स्थान पर रखे गए कि कक्षा में बाधा न हो		
• सभी छात्रों के साथ आदर एव् सम्मान के साथ बात की गई		
• विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों से सीधे बात न करते हुए शिक्षिका ने अन्य छात्रों के माध्यम से बात की		
• शिक्षिका ने विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों को भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया		
• शिक्षिका ने छात्रों को कक्षा में अपनी बात व्यक्त करने के लिये संचार के अन्य साधनों के माध्यम से भाग लेने का मौका और समय दिया		
• शिक्षिका ने केवल विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों पर ही ध्यान दिया		

भाग 3. छात्रों की विशेष ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए पढ़ाना

इस अध्याय में आप जानकारी पाएँगे कि विशेष ज़रूरतें क्या होती हैं और विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों को सामान्य कक्षा में कैसे पढ़ाया जा सकता है ।

3. 1. विशेष ज़रूरतों वाले छात्र कौन हैं ?

जब हम 'स्पेशल या विशेष' ज़रूरतों के बारे में सुनते या सोचते हैं तो आमतौर पर हमारे ध्यान में विकलांग छात्रों की तस्वीर आती है । इनमें शामिल हैं:

- सेरेब्रल पॉल्सी (CP-Cerebral Palsy)
- मानसिक मंदता(MR-Mental Retardation, Slow Learner)
- दृष्टि में हानि (VI-Visual Impairment)
- सुनने में हानि (HI-Hearing Impairment)
- ऑटिज़्म (Autism)
- लर्निंग डिसेबिलिटी (LD-Learning Disability)
- एकाधिक विकलांगता (MD-Multiple Disability)

हालांकि 'स्पेशल' शब्द पहले विकलांग छात्रों के लिए इस्तेमाल किया गया था परन्तु पिछले कुछ वर्षों में इसके अर्थ और दायरे को बढ़ाया गया है ।

आज जब हम विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के बारे में बात करते हैं तो उनमें कई छात्र शामिल हैं जो स्कूल में सीखने और पढ़ने में संघर्ष कर रहे हैं ।

स्कूल में भाग लेने और सीखने के लिये जब छात्रों को बाधाओं का सामना करने के लिये अतिरिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है उन्हें विशेष ज़रूरतों वाले छात्र कहा जाता है ।

आपके अनुभवों ने दिखाया होगा कि एक सामान्य कक्षा में भी हमेशा कुछ ऐसे छात्र होते हैं जिनपर बाकी छात्रों की तुलना में अधिक ध्यान देने की ज़रूरत होती है - कभी पारिवारिक स्थिति तो कभी पढ़ाई या व्यवहार सम्बंधित कारणों से ।

विकलांग और वंचित छात्रों के अलावा वे सब गैर विकलांग और गैर वंचित छात्र भी इनमें शामिल हैं- जो सीखने पढ़ने में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं । हाँ, मुश्किलों के कारण अलग अलग हो सकते हैं-

- किसी के लिये कारण भावनात्मक है तो किसी के लिये सामाजिक
- किसी के लिये ज्ञान-सम्बंधी है तो किसी के लिये व्यवहार सम्बंधी
- किसी के लिये पारिवारिक स्थिति है तो किसी के लिये आर्थिक स्थिति

3. 2. समावेशी शिक्षा हमें किन मौजूदा धारणाओं और मान्यताओं में परिवर्तन लाने के लिए प्रोत्साहित करती है?

शिक्षा प्रणाली से सम्बंधित ऐसी कई धारणाएँ और विश्वास मौजूद हैं जो शिक्षा के प्रगतिशील व निर्माणकारी विचारों के साथ मेल नहीं खाते । समावेशी शिक्षा मौजूदा आम धारणाओं और मान्यताओं को चुनौती देते हुए एक नया नज़रिया व दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है ।

समावेशी शिक्षा हमें अपनी सोच को विस्तृत करके छात्रों के सामने आने वाली बाधाओं व कठिनाइयों को एक अलग तरीके से सोचने के लिए प्रोत्साहित करती है ।

- क्या शिक्षा में कठिनाइयाँ व बाधाएँ केवल विकलांग बच्चों तक ही सीमित हैं ?
- क्या सामान्य छात्रों को पढ़ाई में कभी कठिनाई नहीं आती ?
- क्या केवल विकलांग छात्र व्यवहार सम्बंधित समस्याओं का प्रदर्शन करते हैं ?
- क्या सामान्य छात्रों के बीच झगड़ा नहीं होता?
- क्या सामान्य / अमीर घरों से आने वाले छात्र गाली गलोच नहीं करते?
- क्या सामान्य छात्रों को कभी मदद की ज़रूरत नही पड़ती?
- क्या सभी विकलांग बच्चों को सीखने पढ़ने में कठिनाई होगी?

आइये, मौजूदा धारणाओं और समावेशी दृष्टिकोण पर एक नज़र डालें ।

I.

आम सोच- कक्षा में केवल विकलांग छात्र बाधाओं का सामना करते हैं और केवल उन्हें ही समावेशी शिक्षा की आवश्यकता है ।

समावेशी दृष्टिकोण -कक्षा में बाधाओं का सामना और सहयोग की आवश्यकता एकमात्र विकलांग बच्चों तक सीमित नहीं है । अन्य बच्चों को भी सीखने के लिए संघर्ष करना पड़ता है और समावेशी शिक्षा से उन्हें भी लाभ होगा ।

उदाहरण:

- हर कक्षा में कुछ छात्र होते हैं जो एक ही बार में सीख लेते हैं और कुछ ऐसे छात्र जो कई बार सिखाने से भी नहीं सीख पाते ।
- कुछ छात्र शर्मीले स्वभाव की वजह से कक्षा व अन्य गतिविधियों में भाग नहीं लेते जबकि कुछ छात्र आत्म विश्वास के साथ हर कार्य में भाग लेते हैं ।
- कुछ छात्र शिक्षक को ध्यान लगाकर सुनते हैं जबकि कुछ छात्रों को ऐसा करने में मुश्किल होती है - उन्हें लम्बे समय तक एक जगह बैठने में दिक्कत आती है और कुछ समय के बाद वे बेचैन व परेशान हो जाते हैं ।
- आर्थिक स्थिति के कारण कुछ छात्रों को घर में माता पिता की मदद करने के लिये स्कूल से छुट्टी लेनी पड़ती है जबकि कुछ छात्रों से घर में किसी प्रकार की मदद की उम्मीद नहीं की जाती ।

II.

<u>आम सोच-</u>एक ही विकलांगता वाले सभी छात्रों की ज़रूरतें भी एक जैसी ही होती हैं ।

<u>समावेशी दृष्टिकोण-</u> एक ही विकलांगता होते हुए भी ज़रूरतें अलग हो सकती हैं । इसलिए छात्रों के लिये उनकी ज़रूरत के अनुसार सहयोग आयोजित किया जाना वांछनीय है ।

उदाहरण:

- यह ज़रूरी नहीं है कि सभी सेरिब्रल पॉल्सी (CP) वाले बच्चों को व्हीलचेयर की आवश्यकता होगी । एक छात्र को चलने के लिये सहायक सामान या उपकरण की ज़रूरत हो सकती है और दूसरे को बात करने के लिए सहायक माध्यमों की ।
- यह ज़रूरी नहीं है कि दृष्टि में कठिनाई वाले (VI) सभी छात्रों को ब्रेल सीखने की आवश्यकता होगी । एक छात्र को शायद किताब के बड़े माप वाली फोटोकॉपी से फ़ायदा हो और दूसरे छात्र को ऑडियो टेप द्वारा या मुँह ज़ुबानी सुनने से ।

III. <u>आम सोच</u>-एक ही पारिवारिक स्थिति या वातावरण से आने वाले दो छात्रों की ज़रूरतें, बाधाएँ और कठिनाइयाँ भी एक जैसी होती हैं ।

<u>समावेशी दृष्टिकोण -</u> एक ही परिवार से आने वाले दो छात्रों की ज़रूरतें भी अलग हो सकती हैं । इसलिए उनकी ज़रूरत के अनुसार सहयोग आयोजित किया जाना वांछनीय है ।

उदाहरण:

- कक्षा में परिवार का एक बच्चा शिष्टाचार और भाई चारे का प्रदर्शन करता है जबकि उसी छात्र के भाई या बहन के लिए यह कठिन हो सकता है या शायद उनके लिए प्राथमिकता ही नहीं ।
- कक्षा में शायद परिवार के एक छात्र को गणित में ध्यान लगाने और सीखने के लिये सहयोग चाहिये । उसी छात्र के भाई या बहन के लिए शायद गणित बहुत आसान और मनपसंद विषय हो ।

IV. <u>आम सोच-</u>एक प्रकार की बाधा या कठिनाई का एक ही कारण होता है ।

<u>समावेशी दृष्टिकोण-</u> छात्रों की बाधा या कठिनाई चाहे एक हो, लेकिन कारण अलग हो सकते हैं । इसलिए कारण को बारीकी व गहराई से जानने और समझने के बाद ही सहयोग आयोजित किया जाना वांछनीय है ।

उदाहरण:

कक्षा में चार ऐसे छात्र हो सकते हैं जो पढ़ाई के समय ध्यान नहीं देते और अन्य छात्रों को परेशान भी करते हैं । चारों छात्रों की कठिनाई एक है-'कक्षा में ध्यान न दे पाना' । (Attention problem) लेकिन, चारों छात्रों के ध्यान न देने के कारण अलग हो सकते हैं, जैसे कि:

- पहले छात्र के लिए शायद कक्षा में पढ़ाया जा रहा है विषय बहुत आसान है । इसलिये पढ़ाये जा रहे विषय में उसे कोई दिलचस्पी नहीं है और वह कक्षा में ध्यान नहीं दे पा रहा ।
- दूसरे छात्र के लिए शायद कक्षा में पढ़ाया जा रहा है विषय उसकी समझ के स्तर के मुकाबले कहीं ज्यादा हो जिसके कारण वह कक्षा में ध्यान नहीं दे पा रहा है ।
- तीसरा छात्र शायद शिक्षक द्वारा इस्तेमाल की जा रही भाषा नहीं समझ पा रहा जिसकी वजह से वह ध्यान नहीं दे नहीं पा रहा है ।
- चौथा छात्र शायद ध्यान आकर्षित करने के लिये शिक्षक को परेशान कर रहा है ।

V. <u>आम सोच-</u>एक बाधा या कठिनाई का एक सा हल सब छात्रों और सब परिस्तिथियों में प्रभावी साबित होता है ।

<u>समावेशी दृष्टिकोण-</u> छात्रों की बाधा या कठिनाई चाहे एक हो, लेकिन यह ज़रूरी नहीं है कि एक ही हल सभी के लिये प्रभावी हो ।

उदाहरण:

कक्षा में दो ऐसे छात्र हो सकते हैं जो अक्सर परेशान या विचलित हो जाते हैं । लेकिन यह संभव है कि दोनों छात्रों को शांत करने के लिये तरीके अलग हों ।

- एक छात्र शायद प्यार से समझाने पर शांत हो जाये ।
- दूसरा छात्र शायद यह तरीके इस्तेमाल करने से और अधिक परेशान हो जाये । उस छात्र को शांत करने के लिये कुछ समय के लिये मनपसंद वस्तु देना या अकेले छोड़ना अधिक प्रभावी हो सकता है ।

कठिनाई चाहे एक हो, लेकिन हल अलग हो सकते हैं । इसलिए उनकी ज़रूरत और परिस्थिति के अनुसार सहयोग आयोजित किया जाना चाहिये ।

VI. आम सोच-छात्रों को केवल पढ़ाई सम्बंधित बाधाओं और ज़रूरतों के लिये सहयोग की आवश्यकता होती है।
समावेशी दृष्टिकोण- छात्रों को पढ़ाई के अलावा स्कूल की दिनचर्या के किसी भी समय , क्षेत्र या गतिविधि के दौरान बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है ।

उदाहरण:

पढ़ाई के अलावा छात्रों को स्कूल की दिनचर्या में किसी भी समय, गतिविधि या क्षेत्र में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है । जैसे:

- नियमित रूप से स्कूल आने के लिए
- समय पर स्कूल आने के लिए
- एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने के लिए
- खेल के समय
- भोजन के समय
- शौचालय जाने और करने के समय
- सह पाठयक्रम गतिविधियों के समय

इसलिए समय, गतिविधि और क्षेत्र के अनुसार उचित छूट और सहयोग आयोजित किया जा सकता है ।

3. 3. शिक्षा सम्बंधी कुछ सामान्य बाधाएँ

आमतौर पर जब हम कक्षा में बाधा या कठिनाई की बात करते हैं तो मन में विकलांगता या वर्ग के अनुसार सोचते हैं । उदाहरण के लिए-

- अगर छात्र 'मंदबुधि श्रेणी में डाला गया है तो वह बात नहीं समझ पाएगा और पढ़ाई में बहुत कठिनाई होगी
- अगर छात्र 'विकलांग / CP श्रेणी में है तो उसे हर समय और हर गतिविधि के दौरान मदद देनी होगी
- अगर छात्र 'गरीब घर' (EWS श्रेणी) का है तो ज़रूर गाली देता होगा और मार पीट करता होगा
- अगर छात्र 'प्रवासी' हैं तो छात्र के माता पिता को पढाई की परवाह नहीं होगी और स्कूल से बार बार लम्बी छुट्टी लेगा

समावेशी शिक्षा हमें विकलांगता / वर्ग के आधार सहित सभी छात्रों के सामने आने वाली बाधाओं को पहचानने, उनके कारण जानने और उन्हें दूर करने के तरीकों के बारे में सोचने और लागू करने के लिये प्रेरित करती है ।

छात्रों को विद्यालय में कई प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है ।

अध्यापकों द्वारा कक्षा व छात्रों के साथ प्रयोग की गयी भाषा और व्यवहार भी कई बार बाधा एवं कठिनाई बन जाती है ।

3. 4. विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के सामने आने वाली बाधाओं को हटाने के लिये क्या कदम उठाये जा सकते हैं?

छात्रों की विशेष ज़रूरतों पर ध्यान देना ज़रूरी है ताकि वे पढ़ने-सीखने में आने वाली बाधाओं का प्रभावपूर्ण रूप से सामना कर सकें। जैसा कि हमने पहले पढ़ा:

- छात्र अलग अलग अनुभवों, व्यक्तिगत परिस्थितियों, ज़रूरतों और क्षमताओं के साथ स्कूल आते हैं।
- छात्रों को अलग-अलग बाधाओं व कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- इन बाधाओं को दूर करने के लिए कोई एक समाधान नहीं है।
- छात्र के सामने आने वाली बाधाओं और ज़रूरतों के हिसाब से समावेशी शिक्षा प्रणाली या तरीका तय करने की आवश्यकता है।
- भले ही छात्रों के लिये प्रणालियाँ और तरीके अलग हों, लेकिन उन्हें तय करने के लिये एक सामान्य क्रम है जो हर छात्र के लिये लागू किया जा सकता है।

प्रणालियाँ और तरीके तय करने के लिये क्रम इस प्रकार है:

छात्र के सामने आने वाली बाधा की पहचान करें

- बाधा/ कठिनाई क्या है? क्या यह व्यवहार किसी खास समय, विषय, गतिविधि के दौरान या किसी खास व्यक्ति के साथ होती है ?

छात्र के बारे में विस्तृत जानकारी लेकर बाधा या कठिनाई के संभावित कारणों की सूची बनायें

- कठिनाई/ बाधा का क्या कारण है - विकलांगता, शिक्षक, व्हवहार, परस्परिक संबंध , भाषा, स्कूल सम्बंधित या आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक स्थिति
- इस प्रक्रिया में आप उपयुक्त लोगों से सहयोग ले सकते है - छात्र से, उसके परिवारजन से, अन्य शिक्षकों, विशेष टीचर, BRT और SMC व अन्य संस्थाओं से

बाधा या कठिनाई दूर करने के तरीके और उपाय सोचें

तरीके ढूंढते समय इन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है

क्या सोची गयी विधि लागू करने पर:

- कहीं छात्र बाकी छात्रों से अलग या दूर तो नहीं हो रहा
- कहीं बाकी छात्रों को परेशानी तो नहीं होगी
- अन्य छात्रों की ज़रूरतों और अधिकारों को अनदेखा तो नहीं किया जा रहा

क्या सोची गयी विधि के लिये:

- समय और संसाधन का प्रबंध/ बंदोबस्त करना वास्तव में संभव है या नहीं
- खरीदे गये संसाधन का रखरखाव और मरम्मत संभव और किफायती है या नहीं

सोचे गए तरीके और उपायों को लागू करें

कुछ समय बाद समीक्षा करें और देखें कि अपनाये गए तरीके कारगर साबित हुए या नहीं

छात्रों के लिये प्रणालियाँ और तरीके तय करने की प्रक्रिया को बारीकी व गहराई से समझने के लिये आइये, शिक्षकों द्वारा कुछ बनाए गए नमूनों का अध्ययन करें ।

नाम - सोनू आयु - 9 साल कक्षा - 3

शैक्षिक स्तर गणित - कक्षा 2
हिंदी - कक्षा 1
अंग्रेजी - कक्षा 1

मीटिंग में उपस्थित लोग - दीपिका (क्लास टीचर), सुमन (गणित अध्यापिका), सोनू, सोनू के माता पिता, प्रार्थना (स्कूल प्रबंधन की ओर से), गीतिका (स्पेशल एजुकेटर)

किस समय कठिनाई	क्या कठिनाई	किन कारणों से कठिनाई	कारगर उपाय
- स्कूल की दिनचर्या के दौरान जैसे • खेल का समय • प्रार्थना के समय • एक क्लास से दूसरी क्लास में जाने के दौरान - कक्षा समय के दौरान गणित हिंदी	- सहपाठियों तथा अन्य व्यक्तियों के प्रति कभी कभी आक्रोश से भरा व्यवहार तथा कई परिस्थितियों में दूसरे बच्चों की पिटाई करना - कक्षा समय के दौरान अपना काम खत्म हो जाने पर अन्य सहपाठियों को परेशान करना तथा टीचर की बात न सुनना - गृहकार्य पूरा न होना तथा कई बार पूछे जाने पर नई कॉपी ले आना या अन्य कोई बहाना बनाना	छात्र संबंधित - अपने शिक्षकों तथा अन्य व्यक्तियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना ताकि उनकी बात सुनी जाए कक्षा या स्कूल संबंधित - गणित तथा हिंदी विषयों में सोनू की समझ उसके वर्तमान शैक्षिक स्तर से अधिक है - हर गलती पर सोनू को डाँटा जाना परंतु कारण के बारे में न बात करना परिवार संबंधित - पिता के गुस्से तथा आक्रोश भरे व्यवहार के कारण सोनू का माता पिता से कम बात करना - घर पर पीटे जाने पर अन्य छात्रों को पीटकर अपना गुस्सा दिखाना - पिता जी के रवैये तथा माताजी के काम पर होने के कारण गृहकार्य के लिए समय न दे पाना	छात्र संबंधित - यदि सोनू को कोई भी बात स्कूल तथा घर से जुड़ी परेशान करती है तो वह खाने की छुट्टी के दौरान अपनी टीचर से बात करे - गृहकार्य के लिए थोड़ा समय अवश्य दे। यदि कठिनाई हो तो घर के पास स्कूल के अन्य छात्रों के साथ समूह में करे। कक्षा या स्कूल संबंधित - गणित तथा हिंदी में सोनू के वर्तमान शैक्षिक स्तर का आकलन हो। यदि वर्ष के बीच में ऐसा संभव न हो तो विषय से जुड़ी थोड़ी कठिन गतिविधि सोनू के लिए बनाई जाए। - कक्षा में सोनू के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन होने पर उसकी प्रशंसा करें तथा कक्षा में दोस्ती भरा सकारात्मक माहौल बनाएँ। परिवार संबंधित - पिता सोनू के प्रति अपने रवैये में सुधार करें तथा घर पर उसके साथ मार पीट न करें - छोटे छोटे कामों को पूर्ण करने पर उसकी प्रशंसा करें - गृहकार्य के बारे में सोनू से अवश्य पूछें। भले ही उसकी मदद न कर पायें परंतु उसके पास थोड़ा समय अवश्य बैठें।

समीक्षा करने की अगली तारीख - 4/12/13

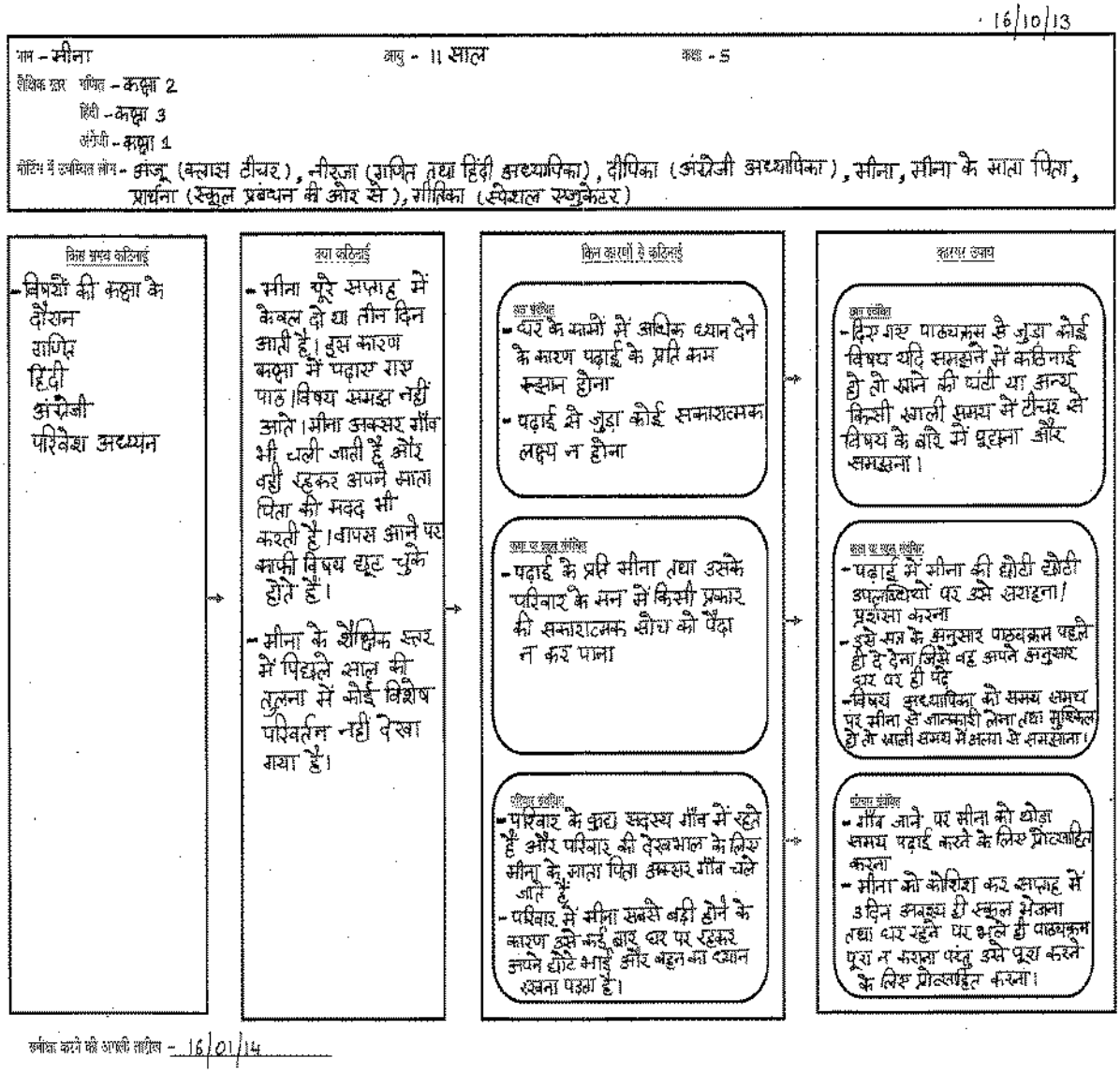

शिक्षकों के लिये कार्य

किसी भी एक छात्र/छात्रा के बारे में सोचिए जिसे आपकी क्लास में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कठिनाइयों व बाधाओं को दूर करने के तरीके तय करने के लिए **संलग्न** दिए फॉर्मेट C. में जानकारी भरें ।

<u>यदि आपके स्कूल में विशेष शिक्षक या ब्लॉक संसाधन टीचर (BRT) हैं, तो उन्हें भी इस अभ्यास में शामिल करें</u> ।

3. 5. छात्रों के सामने आने वाली विकलांगता सम्बंधित जानकारी व बाधाओं को दूर करने के लिये उपाय और सुझाव

एक सामान्य अध्यापक कक्षा में विकलांग छात्रों के सामने आने वाली बाधाओं को कैसे दूर कर सकते हैं-आइये कुछ जानकारी व सुझावों पर नज़र डालें:

1 श्रवण बाधित / Hearing Impairmnent (HI)

ऊँचा सुनने वाला/ /Hard of hearing

बधिर /Deaf

छात्रों को सुनने में कठिनाई हो तो उन्हें कक्षा में कई अतिरिक्त बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है ।

जैसे:

- शिक्षक और अन्य छात्रों को स्पष्ट रूप से सुन व समझ पाना
- अपनी बात बोलना या विचार व्यक्त करना
- मौखिक गतिविधियों और चर्चाओं में प्रभावी रूप से भाग ले पाना
- सुनने और बात करने में कठिनाइयों की वजह से सीमित दोस्त

स्कूल / कक्षा में पेश आ रही कठिनाइयों को कम करने के लिये कुछ उपाय और सुझाव

जिन छात्रों को सुनने में दिक्कत है वह मुख्यतः 'देखकर' सीखते हैं, इसलिए यह ज़रूरी है कि:

- ✓ छात्र ऐसे स्थान पर बैठे जहाँ से वह शिक्षक और अन्य छात्रों को स्पष्ट रूप से देख सके।
- ✓ बात करते एवं पढाते समय ब्लैकबोर्ड लेखन के साथ साथ इशारों और तस्वीरों का प्रयोग करें ।
- ✓ बात करने से पहले यह सुनिश्चित करें कि छात्र आपको देख रहा है। अन्य छात्रों द्वारा बोले गए वाक्यों व प्रश्नों को एक बार पूरी कक्षा के लिये दोहरा दें -इससे छात्र का ध्यान विषय की ओर आकर्षित करने में मदद मिलेगी ।
- ✓ कुछ छात्रों को कक्षा में बोलने में मुश्किल या झिझक हो सकती है । उन्हें अन्य माध्यमों से अपनी बात समझाने का मौका और समय दें। जैसे-इशारे व संकेत, चित्र, लिखकर या लिखे हुए अक्षरों व शब्दों को दिखाकर ।
- ✓ कक्षा में लिखित सामग्री/चार्ट को चित्रों के साथ दर्शायें ताकि वह भी ठीक से समझ और सीख सकें।
- ✓ कक्षा में प्रदर्शित सामग्री छात्रों के आँख के स्तर पर लगायें जिससे छात्र उसे स्पष्ट रूप से देख सकें । इस बात का ध्यान दें कि प्रदर्शित सामग्री ऐसे माप की हो जो पढ़ी जा सके।

- ✓ कक्षा में बार-बार दिए जाने वाले निर्देशों को चित्रों द्वारा एक चार्ट पर दर्शाएँ ताकि शिक्षक सभी छात्रों तक अपनी बात पहुँचा सके ।
- ✓ कक्षा में समय सारिणी (टाइम-टेबल) को चित्रों के साथ दर्शाएँ ताकि सभी छात्रों को दिन की गतिविधियों तथा क्रम के बारे में पता रहे।
- ✓ छात्र को उनके नाम से संबोधित करें,उनकी विकलांगता या अन्य लक्षण से नहीं ।
- ✓ छात्र से सीधे बात करें, नाकि अन्य छात्रों के माध्यम से ।
- ✓ छात्र को समस्या समझकर नज़रअंदाज़ न करें -उन्हें भी भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें।
- ✓ छात्र से छोटे और स्पष्ट वाक्यों में बात करें-लम्बे वाक्यों का उपयोग कम से कम करें ।
- ✓ निर्देश का पालन न करने व उसी निर्देश को बार-बार ऊँची आवाज़ में दोहराने से छात्र समझने की जगह घबरा सकता है ।
- ✓ आप बोलने के साथ-साथ इशारों और तस्वीरों का भी इस्तेमाल करें ताकि छात्र उसे समझ सके ।
- ✓ छात्र से अपनी क्षमता और समझ के अनुसार जानकारी को ग्रहण करने की उम्मीद करें ।

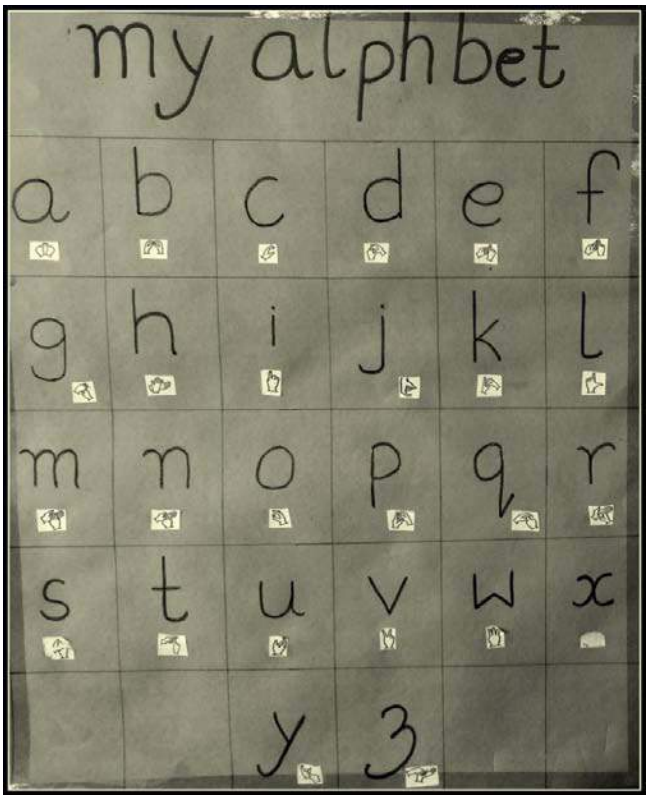

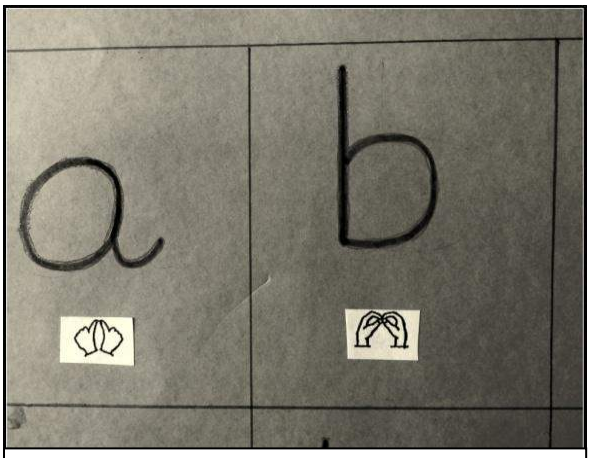

कक्षा में सभी बच्चों को नंबर व अंग्रेज़ी के अक्षर सिखाते समय उन्हे संकेत भी सिखायें - ऐसा करने से न केवल सुनने में कठिनाई वाले बल्कि अध्यापक साहित कक्षा के सभी छात्र संकेत भाषा साथ-साथ सीख पाएँगे। समावेशी किट में इसके लिये चार्ट और DVD में जानकारी दी गई है।

अन्य माध्यमों (जैसे-इशारे ,संकेत भाषा) से अपनी बात समझाने का मौका और समय दें ।

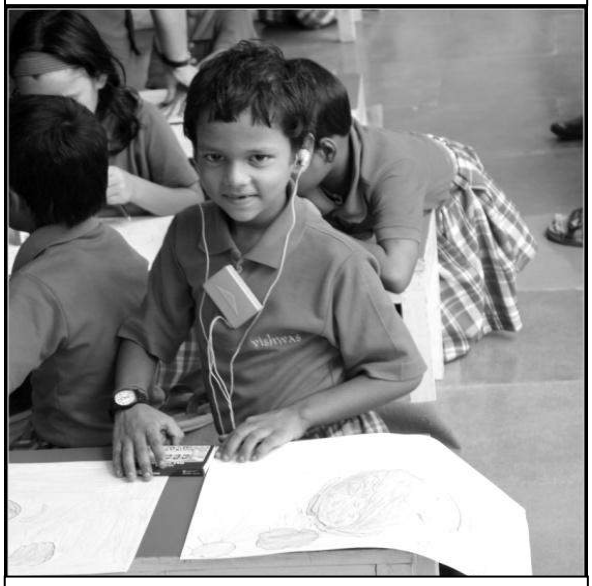

कान की मशीन के बारे में जानकारी हासिल करें -कैसे चालू (On) / बंद (Off) किया जा सकता है ,ध्वनि और बैटरी की जाँच

- ✓ छात्रों के शैक्षिक स्तरों के आधार पर लक्ष्य बनाये जाने से वह बेहतर सीखेंगे ।

- ✓सभी छात्रों से एक ही तरह के जवाब की उम्मीद न करें, बल्कि छात्रों की समझ, शैक्षिक स्तर और क्षमता के हिसाब से । कुछ छात्रों से एक शब्द में जवाब देने की उम्मीद करें , कुछ छात्रों से संकेत, इशारे या तस्वीर के माध्यम से और कुछ छात्रों से पूर्ण वाक्य में जवाब देने की उम्मीद करें।
- ✓यह वांछनीय है कि भारतीय सांकेतिक भाषा से आप अपने को परिचित करायें । कक्षा में सभी छात्रों को नंबर व अंग्रेज़ी के अक्षर सिखाते समय संकेत भी सिखायें -ऐसा करने से न केवल सुनने में कठिनाई वाले बल्कि अध्यापक साहित कक्षा के सभी छात्र संकेत भाषा साथ साथ सीख पाएँगे । समावेशी स्वाध्ययन सामग्री में इसके लिये चार्ट और DVD में जानकारी दी गई है ।
- ✓यह भी वांछनीय है कि आप कान की मशीन के बारे में जानकारी हासिल करें - यह कैसे चालू (On) और बंद (Off) की जा सकती है ? ध्वनि की मात्रा को समायोजित कैसे किया जा सकता है ? आप बैटरी की जाँच कैसे कर सकते हैं ? घबराने की जगह उल्लास से एक नया कौशल सीखें - जिसका संचालन एक सामान्य रेडियो से मिलता जुलता है। इसके लिये SMC द्वारा अध्यापकों के लिये ट्रैनिंग एवम् पाठन सामग्री का अयोजन किया जा सकता है।
- ✓कक्षा में अधिक शोर का स्तर होने से कान की मशीन पहनने वाले छात्र को परेशानी हो सकती है। यह इसलिए क्योंकि मशीन छात्र के कान में शोर का स्तर भी बढ़ा देती है । ऐसे समय में छात्र को मशीन की ध्वनि की मात्रा को कम करने या थोड़ी देर मशीन को बंद करना भी आप सिखा सकते हैं ।

सांकेतिक भाषा में अंग्रेज़ी के अक्षर

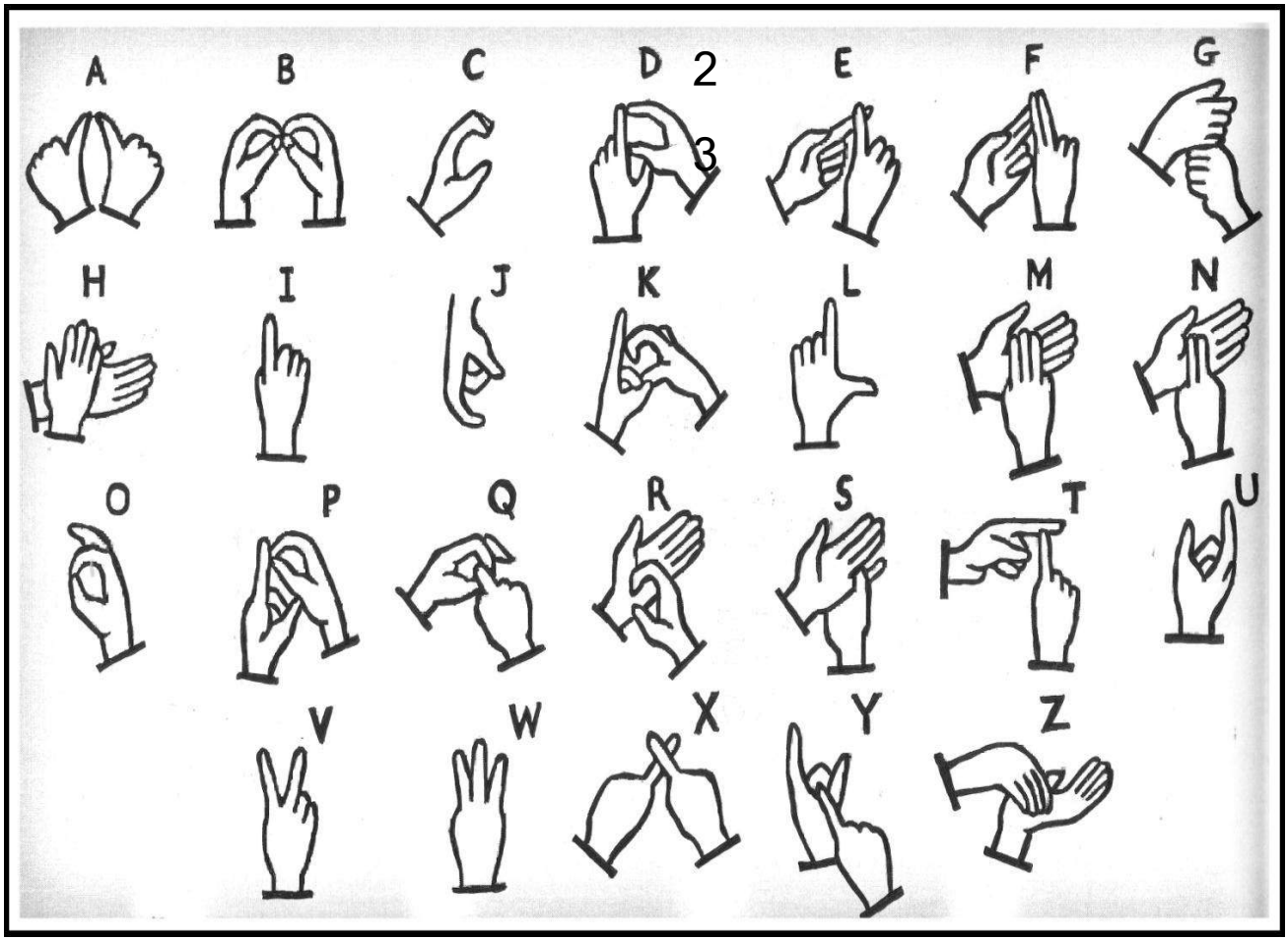

शिक्षकों के लिये कार्य

ऊपर दिए गए सांकेतिक भाषा चार्ट का उपयोग कर अपना नाम बताओ

2.अंधापन (Blindness)

दृष्टि बाधित / Visual impairment (VI)

अल्प / कम दृष्टि/ देखने में कठिनाई /Low vision

छात्रों को देखने में कठिनाई हो तो उन्हें कक्षा में कई अतिरिक्त बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है । जैसे:

- कक्षा में सहपाठियों और शिक्षकों के हाव भाव समझ पाना
- ऐसी गतिविधियों को समझने में जिनमें प्रदर्शित सामग्री जैसे ब्लैकबोर्ड , सांकेतिक भाषा के चार्ट, मॉडल और तस्वीरों का उपयोग होता हो
- प्रदर्शन कला से जुड़ी चर्चाओं में प्रभावी रूप से भाग ले पाना,जैसे कला, नाँच-गाना खेल-कूद और अन्य रुचि के कार्य

देखने में कठिनाई और आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिये उपाय और सुझाव

जिन छात्रों को देखने में कठिनाई है वे अपनी अन्य इंद्रियों का उपयोग कर सीखते हैं जैसे कि सुन कर, महसूस कर के और सूँघ कर । इसलिए यह ज़रूरी है कि:

- ✓ कक्षा में प्रवेश करते समय व बाहर जाते समय आवाज़ द्वारा सूचित करें-"नमस्ते छात्रों,मैं __मैडम,हिन्दी क्लास के लिये आ गयी हूँ" ।
- ✓ कक्षा में अन्य छात्रों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

- ✓ छात्र ऐसे स्थान पर बैठें जहाँ से वह शिक्षक और अन्य छात्रों को स्पष्ट रूप से सुन सके।
- ✓ पढ़ाते समय ब्लैकबोर्ड लेखन , इशारों और तस्वीरों के साथ साथ मौखिक भाषा का प्रयोग करें । जहाँ तक संभव हो सके ठोस वस्तुओं से भी अनुभव कराएँ ।
- ✓ छात्र के साथ बात करने से पहले नाम लेकर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करें -यह सुनिश्चित करें कि छात्र को पता हो कि आप उससे बात कर रहे हैं ।
- ✓ छात्र की ओर केवल देखकर प्रश्न पूछने से छात्र को पता नहीं चलेगा कि सवाल उससे पूछा जा रहा है-प्रश्न पूछते समय पहले छात्र को नाम से संबोधित करें ।
- ✓ छात्र को उनके नाम से संबोधित करें, उनकी विकलांगता से नहीं ।
- ✓ छात्र की विशेष ज़रूरतों एवं कठिनाइयों को समस्या समझकर नज़रअंदाज़ न करें - उसे भी भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें।
- ✓ दृष्टि में कमी होने पर यह ज़रूरी नहीं है कि छात्र को मदद चाहिये। तभी मदद करें जब ज़रूरत हो और छात्र की सहमति हो । अत्याधिक सुरक्षा न प्रदान करें-ऐसा करने से हम छात्र से आत्मनिर्भर होने का मौका छीन लेते हैं ।

- ✓ छात्र से सीखने एव् ज़िम्मेदारियों को पूरी करने की उम्मीद रखें- छात्र को बेचारा समझ कर उनके लिये सारे काम न करें ।
- ✓ छात्र को दिशा के बारे में सिखायें -बात करते समय यहाँ-वहाँ और इधर-उधर जैसे शब्दों के स्थान पर दिशा से जुड़े शब्दों का इस्तेमाल करें ,जैसे - दाएँ-बाएँ, ऊपर-नीचे और आगे-पीछे । कक्षा में पास बैठे अन्य छात्रों को भी प्रोत्साहित करें कि वह छात्र को अवश्य बताएं वह उसके पास किस दिशा में बैठे हैं ।
- ✓ छात्र को बिना बताए अचानक से छुएं या पकड़ें नहीं ।
- ✓ यह भी ज़रूरी है कि यदि कक्षा के भौतिक वातावरण में कोई भी बदलाव किया गया हो (जैसे-छात्र के बैठने की व्यवस्था में) तो छात्र को उसकी सूचना कक्षा शुरू होने से पहले ही अवश्य दें ताकि उसे जगह ढूँढने में परेशानी न हो ।
- ✓ छात्र के टेबल या कुर्सी पर एक स्पर्शनीय निशान लगा दें ताकि वह अपने स्थान पर बैठने में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो नाकी दूसरों पर निर्भर ।

कम दृष्टि के साथ छात्रों को बड़ी तस्वीरें और बड़े प्रिंट की पठन सामग्री से लाभ होगा- फोटोकॉपी के माध्यम से पाठ्यपुस्तक का माप बड़ा किया जा सकता है।

ठोस चीजों और स्पर्शनीय निशानों के उपयोग से फायदा होगा

यह अक्सर तर्क दिया जाता है कि अगर सामान्य शिक्षक ब्रेल को पढ़ाने में असमर्थ हैं, तो द्रष्टि बाधित छात्रों का सामान्य स्कूल में समय बर्बाद होगा l यह एक गलत धारणा है-सामान्य शिक्षकों के साथ इन छात्रों को स्कूल गतिविधियों के दौरान कई अन्य अनुभवों में भाग लेने और सीखने का मौका मिलता है जो कि स्कूल पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है । छात्र स्कूल के नज़दीकी संसाधन केन्द्र (Resource Centre) में जाकर Visual Impairment (VI) में प्रशिक्षित विशेष शिक्षक से ब्रेल सीख सकते हैं तथा समसामयिक तकनीकों के बारे में जानकारी भी ले सकते हैं ।

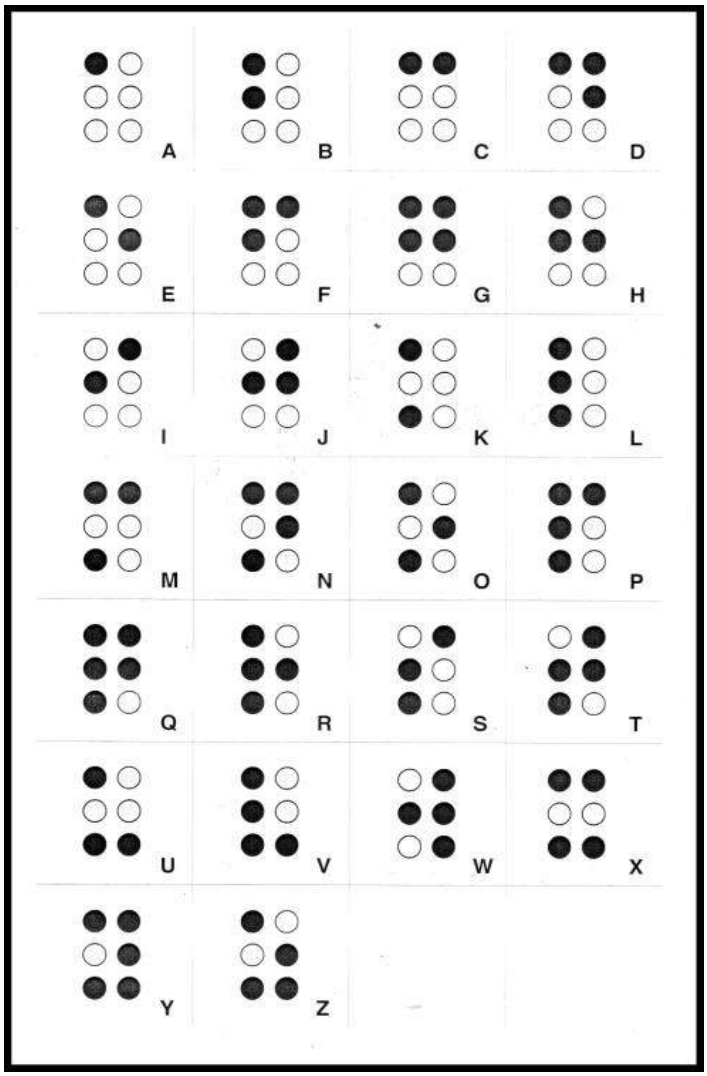

ब्रेल में अंग्रेजी अक्षर

नंबर

1	2	3
4	5	6
7	8	9
	0	

ब्रेल में गिनती (0-10)

शिक्षकों के लिये कार्य

ऊपर दिए गए चार्ट की मदद से अपना नाम ब्रेल में लिखें

3. शारीरिक विकलांगता (Physical disability)
सेरेब्रल पाल्सी (CP-Cerebral Palsy)
लोकोमोटर विकलांगता (Locomotor disability)

छात्रों को शारीरिक कठिनाई (माँसपेशियों में जकड़न, शारीरिक ताल-मेल में समस्या या अनैच्छिक झटके) हों तो उन्हें कक्षा /स्कूल की गतिविधियों में कई अतिरिक्त बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है । जैसे:

- कक्षा / स्कूल में कार्यात्मक गतिविधियों के दौरान (जैसे कि चलने में, बैठने में)
- लिखने में -कक्षा कार्य और होमवर्क को पूरा करने में
- स्कूल की अन्य गतिविधियों में प्रभावी रूप से भाग लेने में असमर्थ (जैसे कि खेल, नृत्य ,पेंटिंग, प्रयोगशाला का उपयोग)
- आत्मनिर्भर रूप से भोजन खाने में
- आत्मनिर्भर रूप से शौचालय के इस्तेमाल में

शारीरिक कठिनाई और आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिये उपाय और सुझाव

✓ स्कूल परिसर में स्थानांतरित करने (एक स्थान से दूसरे स्थान जाना) तथा कक्षा में बैठने के लिए छात्रों की ज़रूरत के अनुसार उपकरणों (सहायक सामान), फर्नीचर, अनुकूलित शौचालय एव् समतल सतह के आयोजन की जिम्मेदारी SMC की है -शिक्षक का कर्तव्य यह सुनिश्चित करना हैं कि उपकरणों एव् समतल सतह का उचित रूप से उपयोग किया जाए ।

- ✓ कक्षा में कुछ छात्रों को शारीरिक कठिनाइयों के कारण चलने व बैठने में अधिक समय लगता है-उन छात्रों को दरवाज़े के निकट बैठाएँ ताकि समय बचे और छात्र थके नहीं । उनके उपकरण (सहायक सामान) ऐसे स्थान पर रखें जहां कक्षा में बाधा न हो।
- ✓ इस बात का ध्यान रखें कि छात्रों को उपकरणों एव् फर्नीचर के आधार पर बिल्कुल अलग बैठाने की बजाय बाकी छात्रों के साथ बैठाया जा रहा है ।
- ✓ ज़रूरत के अनुसार दिनचर्या में की जाने वाली गतिविधियों को पूरा करने में छात्र का समर्थन करें । इसके लिए शिक्षामित्रों, स्वयंसेवकों या कर्मचारियों की व्यवस्था करने के लिए SMC को अवश्य सूचित करें ।
- ✓ कुछ छात्रों को शारीरिक कठिनाई के साथ-साथ बोलने में मुश्किल या झिझक हो सकती है । उन्हें संचार के अन्य माध्यमों से अपनी बात समझाने का मौका और समय दें, जैसे- इशारे व संकेत, चित्र ,लिखकर या लिखे हुए अक्षरों व शब्दों को दिखाकर ।
- ✓ कक्षा में लिखित सामग्री को चित्रों के साथ दर्शायें ताकि जो छात्र अक्षर नहीं पढ़ सकते वह भी ठीक से समझ और सीख सकें।
- ✓ छात्रों के शैक्षिक स्तरों के आधार पर लक्ष्य बनाए जाने से वह बेहतर सीख सखते हैं ।

एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के अन्य माध्यम

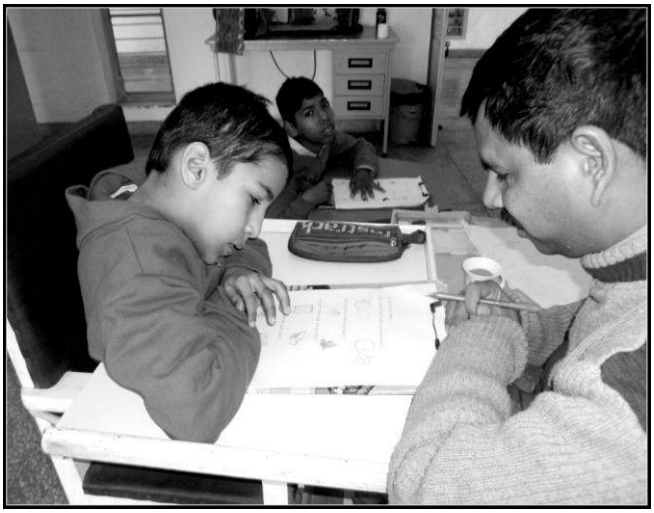

अगर बात करने या लिखने में कठिनाई हो तो कक्षा में वर्णमाला या शब्द बोर्ड का उपयोग किया जा सकता है । परीक्षाओं के दौरान एक लेखक या एकाधिक विकल्पों के प्रश्न पत्र का इस्तेमाल किया जा सकता है ।

स्कूली गतिविधियों के दौरान कई अन्य अनुभवों में भाग लेने और सीखने का मौका- इसके लिए ज़रूरत अनुसार सहायता की व्यवस्था स्कूल की ज़िम्मेदारी

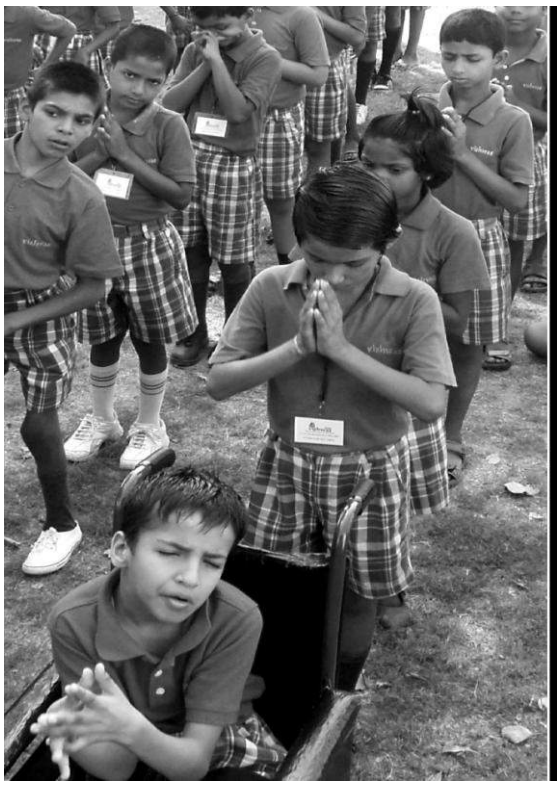

कक्षा में प्रदर्शित सामग्री छात्रों की आँख के स्तर पर लगायें जिससे छात्र उसे स्पष्ट रूप से देख सकें । इस बात का ध्यान दें कि प्रदर्शित सामग्री ऐसे माप की हो जो पढ़ी जा सके।

- ✓ कक्षा में बार-बार दिए जाने वाले निर्देशों को चित्रों द्वारा एक चार्ट में दर्शायें ताकि शिक्षक सभी छात्रों तक अपनी बात पहुँचा सकें।
- ✓ कक्षा में समय सारिणी (टाईम टेबल) को चित्रों के साथ दर्शायें ताकि सभी छात्रों को दिन की गतिविधियों तथा क्रम के बारे में पता रहे ।
- ✓ छात्र को उनके नाम से संबोधित करें ,विकलांगता या अन्य लक्षण से नहीं । छात्र से सीधे बात करें, न कि अन्य छात्रों के माध्यम से ।
- ✓ छात्र को समस्या समझकर नज़रअंदाज़ न करें । उसे भी भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें ।
- ✓ अगर छात्र में कोई विकलांगता है तो यह ज़रूरी नहीं है की उसे मदद चाहिये । तभी मदद करें जब उसकी ज़रूरत हो और छात्र की मर्ज़ी हो । अत्यधिक सुरक्षा न प्रदान करें-ऐसा करने से हम छात्र को आत्मनिर्भर होने का अवसर/मौका नहीं देते हैं ।
- ✓ छात्र से सीखने और ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने की उम्मीद रखें- बेचारा समझ कर उनके लिये सारे काम ना करें ।
- ✓ छात्र से अपनी क्षमता और समझ के अनुसार जानकारी को ग्रहण करने की उम्मीद रखें ।

4. सीखने पढ़ने में कठिनाई

छात्रों को सीखने पढ़ने में अलग अलग प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है । जैसे:

- कक्षा/ कार्य में ध्यान देने में मुश्किल
- कक्षा में कराया जा रहा कार्य / विषय समझ न पाना (कक्षा पाठ्यक्रम का पालन करने में सक्षम न हो पाना)
- पाठ्यक्रम सीखने की सीमित मात्रा और धीमी गति
- कक्षा कार्य और होमवर्क को पूरा करने में कठिनाई
- शैक्षणिक विषयों (गणित ,पढ़ने) में गलतियाँ -आमतौर पर असावधान और लापरवाह बुलाया जाना
- अनुचित/ अनुपयुक्त व्यवहार
- कक्षा/ स्कूल की गतिविधियों में आत्मनिर्भर रूप से भाग न ले पाना

आईये कुछ विकलंगताओं के बारे में जानें जिनके कारण कुछ छात्रों को सीखने पढ़ने में कठिनाई आ सकती है। साथ ही इन बाधाओं का सामना करने के लिये कुछ उपाय और सुझावों का वर्णन किया गया हैं ।

i. धीमी गति / Slow Learner

मानसिक मंदता / MR-Mental Retardation

डाउन्स सिंड्रोम / Downs Syndrome

परिभाषित लक्षण में शामिल हैं :

विकास के सभी क्षेत्रों में देरी (समग्र विलंब)

- सीमित शैक्षिक कौशल
- दिनचर्या में की जाने वाली गतिविधियों को सीखने में कठिनाई (शौचालय, स्नान, कपड़े पहनना, भोजन)
- शारीरिक (मोटर) कौशल और ताल-मेल में कठिनाई
- बोलने व बात करने में कठिनाई
- भाषा का सीमित उपयोग
- उम्र से अनुपयुक्त व्यवहार

स्कूल / कक्षा में पेश आ रही कठिनाइयों को कम करने के लिये कुछ उपाय और सुझाव

- ✓ छात्र को नये कार्य या कौशल को छोटे चरणों में विभाजित करके सिखायें न कि एक साथ ।
- ✓ सरल भाषा और छोटे वाक्यों का उपयोग करें ।
- ✓ छात्र को बोलने में मुश्किल हो तो संचार के अन्य माध्यमों से अपनी बात समझाने का मौका और समय दें । जैसे- इशारे, संकेतों और चित्रों के माध्यम से ।

- ✓ कक्षा में लिखित सामग्री को चित्रों के साथ दर्शायें ताकि जो छात्र अक्षर नहीं पढ़ सकते वह भी ठीक से समझ और सीख सकें।
- ✓ ज़रूरत के अनुसार दिनचर्या में की जाने वाली गतिविधियों को पूरा करने में छात्र का समर्थन करें ।
- ✓ छात्र को उनके नाम से संबोधित करें ,विकलांगता (MR छात्र) या अन्य लक्षण से नहीं ।
- ✓ छात्र से सीधे बात करें, न कि अन्य छात्रों के माध्यम से ।
- ✓ छात्र को समस्या समझकर नज़रअंदाज़ न करें-उसे भी भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें।
- ✓ तभी मदद करें जब उसकी ज़रूरत हो और छात्र की मर्ज़ी हो । अत्यधिक सुरक्षा न प्रदान करें-ऐसा करने से हम छात्र को आत्मनिर्भर होने का अवसर / मौका नहीं देते हैं ।
- ✓ छात्र से सीखने और ज़िम्मेदारियाँ पूरी करने की उम्मीद रखें-बेचारा समझ कर उनके लिये सारे काम ना करें ।
- ✓ छात्र से अपनी क्षमता और समझ के अनुसार जानकारी को ग्रहण करने की उम्मीद रखें । छात्र के शैक्षिक स्तरों के आधार पर लक्ष्य बनायें ।
- ✓ निर्देश का पालन न करने पर वही निर्देश बार-बार और ऊँची आवाज़ में दोहराने से छात्र समझने की जगह घबरा सकता है । संक्षिप्त और सरल निर्देश दें -एक कार्य पूरा होने पर ही अगला निर्देश दें ।

ii. लर्निंग डिसाबिलिटी / LD-Learning Disability

परिभाषित लक्षण में शामिल हैं :

लिखित भाषा व बोली भाषा की समझ और उपयोग में कठिनाई ।

आईक्यू (IQ) बुद्धि -औसत या औसत से ऊपर

- एक या एक से अधिक विशिष्ट शैक्षिक क्षेत्रों में कठिनाई (विकास के सभी क्षेत्रों में नहीं)
- संगठन और समय प्रबंधन में कठिनाई
- विषयों में विफलता के कारण आसानी से निराश
- सामाजिक कौशल प्रभावित

स्कूल / कक्षा में पेश आ रही कठिनाइयों को कम करने के लिये कुछ उपाय और सुझाव

✓नये कार्य या कौशल को छोटे चरणों में विभाजित करके सिखायें न कि एक साथ ।

✓पढ़ाने के लिए अलग अलग और बहु-इन्द्रीय तरीकों का उपयोग ।

✓जिन विषयों में छात्र को कठिनाइयों का सामना करना पढ़ रहा है उनमें कार्य को पूरा करने के लिए छात्र को अतिरिक्त समय देने की व्यवस्था करें ।

✓अध्ययन सामग्री और पाठ्यपुस्तक की मुख्य बातों को कलर कोडिंग करके और उभारकर (हाइलाइट) संगठित और सरल बनायें ।

✓समय प्रबंधन के लिये टाइमर या स्टॉपवॉच की व्यवस्था करें ।

✓निर्देश का पालन न करने पर वही निर्देश बार बार और ऊँची आवाज़ में दोहराने से छात्र समझने की जगह घबरा सकता है । निर्देश में बदलाव लायें व सकारात्मक तरीके से प्रोत्साहित करें ।

iii. ए.डी.एच.डी/ADHD-Attention Deficit Hyperactivity Disorder

परिभाषित लक्षण में शामिल हैं :

ध्यान देने में कठिनाई और/ या आवेगी

- ADHD होने पर लक्षण अनेक संदर्भों और व्यक्तियों के साथ में मौजूद -अगर लक्षण एक व्यक्ति या एक संदर्भ तक ही सीमित हों तो छात्र को ADHD नहीं है
- संगठन और समय प्रबंधन में कठिनाई
- ध्यान देने में कठिनाई
- निर्देशों का पालन करने में कठिनाई
- अनुचित/ अनुपयुक्त व्यवहार (सामाजिक कौशल प्रभावित)
- कक्षा कार्य और होमवर्क को पूरा करने में कठिनाई
- शैक्षणिक विषयों में गल्तियाँ -जिसके कारण छात्र को असावधान और लापरवाह बुलाया जाना

स्कूल / कक्षा में पेश आ रही कठिनाइयों को कम करने के लिये कुछ उपाय और सुझाव

✓ कक्षा और कार्यक्षेत्र को साफ सुथरा व ठीक से संगठित करें ।

✓ नये कार्य या कौशल को छोटे चरणों में विभाजित करके सिखायें न कि एक साथ ।

- ✓ अध्ययन सामग्री और पाठ्यपुस्तक की मुख्य बातें को कलर कोडिंग करके और उभारकर (हाइलाइट) संगठित और सरल बनायें ।
- ✓ समय प्रबंधन के लिये टाइमर या स्टॉपवॉच की व्यवस्था करें ।
- ✓ निर्देश का पालन न करने पर उसे वही निर्देश बार बार और ऊँची आवाज़ में दोहराने से छात्र समझने की जगह घबरा सकता है । निर्देश में बदलाव लायें व सकारात्मक तरीके से प्रोत्साहित करें ।
- ✓ पढ़ाने के लिए अलग-अलग और बहु-इन्द्रीय तरीकों का उपयोग ।
- ✓ अगर कार्य में छात्र की रुचि वाली चीज़ें शामिल करें तो वह अधिक समय तक ध्यान दे पायेगा ।
- ✓ छात्रों के लिये स्पष्ट करें कि कक्षा में कैसे व्यवहार की उम्मीद की जा रही है और कौन से व्यवहार अस्वीकार्य /अनुपयुक्त हैं ।
- ✓ कक्षा में कुछ छात्रों को एक जगह पर लम्बे समय तक बैठने में कठिनाई आती हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें कक्षा के बीच में छोटे छोटे ब्रेक लेने व कुर्सी से उठकर कक्षा में घुमने या चक्कर लगाने की अनुमति दें।
- ✓ कुछ छात्रों के हाथ में अगर उनकी कोई छोटी पसन्दीदा वस्तु हो, तो वह शांत रह पाते हैं और बेहतर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं (जैसे कि-एक छोटी रबर की गेंद, कोई मुलायम खिलौना, दबाने वाला खिलौना)

iv. Autism / आत्मकेंद्रित / स्वलीनता

परिभाषित लक्षण-कुछ क्षेत्रों में असामान्य विकास जैसे: भाषा, सामाजिक कौशल और व्यवहार
-समझ / बुद्धि के विभिन्न स्तर

- भाषा का प्रयोग / बात को व्यक्त करने में कठिनाई
- सामाजिक कौशल -अन्य लोगों के साथ रिश्ते स्थापित करने में कठिनाई
- अमूर्त सोच में कठिनाई (व्यक्ति की सोच ठोस /शाब्दिक होती है)
- एक ही गतिविधि को बार-बार करना
- टकसाली / मशीनी व्यवहार
- दिनचर्या या वातावरण में परिवर्तन से प्रतिरोध
- संवेदी उत्तेजना (sensory stimulation) पर असामान्य प्रतिक्रिया

स्कूल / कक्षा में पेश आ रही कठिनाइयों को कम करने के लिये कुछ उपाय और सुझाव

- ✓ आत्मकेंद्रित /स्वलीन छात्र तस्वीरों के माध्यम से सोचता है, शब्दों के माध्यम से नहीं । इसलिये अध्यापन व बात करते समय चित्रों और दृश्य सुरागों (visual clues) का उपयोग करें ।
- ✓ छोटे और स्पष्ट वाक्यों में बात करें- छात्र के साथ दोहरे अर्थ वाले शब्दों , मुहावरों व लम्बे वाक्यों का उपयोग न करें ।
- ✓ कक्षा में समय सारिणी (टाइम-टेबल) को चित्रों के साथ दर्शायें ताकि छात्र को दिन की गतिविधियों तथा क्रम के बारे में पता रहे ।

- ✓जहाँ तक संभव हो सके ,स्कूली दिनचर्या में स्थिरता और संरचना बनाये रखें । सामान्य अनुसूची या गतिविधि में परिवर्तन हो तो छात्र को दर्श्य समय सरिणी या Flash Cards के माध्यम से पहले ही तैयार/ सूचित करें ताकि वह बदलाव से परेशान न हो ।
- ✓छात्र को समस्या समझकर नज़रअंदाज़ न करें -उन्हें भी भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करें ।
- ✓अगर कक्षा कार्य में छात्र की रुचि वाली चीज़ें शामिल करें तो वह अधिक समय तक ध्यान दे पायेगा ।
- ✓कक्षा में बार-बार दिए जाने वाले निर्देशों को चित्रों द्वारा एक चार्ट पर दर्शाए ताकि छात्र तक अपनी बात पहुँचा सके ।
- ✓छात्रों के लिये स्पष्ट करें कि कक्षा में कैसे व्यवहार की उम्मीद की जा रही है और कौन से व्यवहार अस्वीकार्य /अनुपयुक्त हैं ।
- ✓कक्षा में कुछ छात्रों को एक जगह पर लम्बे समय तक बैठने में कठिनाई आती हैं । ऐसी स्थिति में उन्हें कक्षा के बीच में छोटे छोटे ब्रेक लेने व कुर्सी से उठकर कक्षा में घुमने या चक्कर लगाने की अनुमति दें।
- ✓कुछ छात्रों के हाथ में अगर उनकी कोई छोटी पसन्दीदा वस्तु हो, तो वह शांत रह पाते हैं और बेहतर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं (जैसे कि-एक छोटी रबर की गेंद, कोई मुलायम खिलौना, दबाने वाला खिलौना)
- ✓निर्देश का पालन न करने पर उसे वही निर्देश बार-बार और ऊँची आवाज़ में दोहराने से छात्र समझने की जगह घबरा सकता है । निर्देश में बदलाव लायें व सकारात्मक तरीके से प्रोत्साहित करें ।
- ✓पढ़ाने के लिए अलग अलग और बहु-इन्द्रीय तरीकों का उपयोग ।

छात्रों की विशेष ज़रूरतों पर ध्यान देना ज़रूरी है ताकि वे पढ़ने व सीखने मे आने वाली बाधाओं का प्रभावपूर्ण रूप से सामना कर सकें। प्रशिक्षण पुस्तिका के साथ दी गयी DVD में फिल्म 'छात्रों की विशेष ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए पढ़ाना' देखें -इसमें आप देखेंगे कि छात्रों की विशेष ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए कक्षा में छात्रों को एक साथ कैसे पढ़ाया जा सकता है । उनमें से कुछ छात्रों की विशेष ज़रूरतें भी हैं-अध्यापिका ने विशेष ज़रूरतों का ध्यान रखते हुए दैनिक पाठ योजना इस प्रकार बनाई-

पाठ योजना

दिन / तारीख	19-9-2013 गुरूवार
विषय (subject)	हिंदी
विषय	पूर्व कराई गई मात्राओं का अभ्यास (T.f.f, ७, २)
शिक्षण पद्धति (मौखिक चर्चा , कार्यकलाप वर्कशीट और ब्लैकबोर्ड पर कार्य)	• मौखिक चर्चा द्वारा टीचर / अध्यापिका सभी छात्रों से पूर्व कराई गई मात्राओं के बारे में पूछेंगी। • फ्लैश कार्ड द्वारा कक्षा में प्रत्येक छात्र से चित्र पहचान कर शब्द को ब्लैकबोर्ड पर लिखवाया जाएगा।
पाठ के जरूरी एड्स	फ्लैश कार्ड, चॉक, ब्लैकबोर्ड, डस्टर, कुछ वास्तविक वस्तुएँ
विशेष जरूरतों वाले छात्रों के लिए कुछ आवश्यक एड्स	• कक्षा में निहाल जिन्हें दृष्टि संबंधित कठिनाई है उन्हें वास्तविक वस्तुएँ दी जाएँगी जिनको छूकर उन्हें उसका नाम बताना होगा। इन वास्तविक वस्तुओं को पहचानकर निहाल को उपयोग होने वाली मात्रा के बारे में बताना होगा। • कपिल जिन्हें शारीरिक रूप से तथा बोलने मे कठिनाई है, उन्हें फ्लैश कार्ड द्वारा शब्द पहचानकर उसे अपनी शीट (मात्रा वाले शब्द) पर बताना होगा ।
होमवर्क / गृहकार्य	• वर्कशीट (चित्र देखकर शब्द लिखो) कुछ शब्दों के चित्र दिए जाएँगे जिन्हें पहचानकर छात्रों को उसके नाम लिखने होंगे। कपिल को विकल्प दिए जाएँगे। निहाल को कुछ शब्द दिए जाएँगे तथा वह उस शब्द में उपयोग होने वाली मात्रा की पहचान करेंगे।
मूल्यांकन (क्लासवर्क और होमवर्क)	कक्षा में सभी छात्रों ने उत्साह के साथ भाग लिया। अधिकांश छात्रों को करवाई गई मात्रा की पहचान व समझ है। मितेश और निशा को ७ और २ की मात्रा के शब्दों को लिखने मे कठिनाई हुई तथा उनके साथ इन मात्राओं पर अभ्यास जारी रहेगा।

अध्यापक का नाम व हस्ताक्षर - सोनिया

इस वीडियो में आपने देखा कि किस तरह अलग-अलग ज़रूरतों पर ध्यान देते हुए अध्यापिका द्वारा कक्षा में सभी छात्रों को एक साथ पढ़ाया जा सकता है ।

- शिक्षक ने ऐसा लाभदायक वातावरण बनाया जिसमें हर छात्र को समझने, बोलने और भाग लेने का पूरा अवसर मिला।
- बातचीत करने के लिए शिक्षक ने छात्रों के साथ भिन्न प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल किया। बोलने के साथ-साथ, शिक्षक ने इशारों और चित्रों की मदद से सभी छात्रों के साथ बात की । इस तरह इशारों से, बोलने से और चित्र दिखाकर बात करने से आप भी अपनी कक्षा के सभी छात्रों तक अपनी बात सफलतापूर्वक पहुँचा सकते हैं।
- कक्षा में एक छात्र को देखने में ,एक छात्र को सुनने में, एक छात्र को शारीरिक विकलांगता के कारण बोलने व लिखने में कठिनाई थी जिसके लिए उन्हें कक्षा में अतिरिक्त सहयोग मिलने से फायदा हुआ ।
- एक शर्मीले स्वभाव की छात्रा का आत्म विश्वास बढ़ाने के लिये शिक्षक ने उसको प्रोत्साहित किया ।
- फ़िल्म में इस्तेमाल की गई कुछ प्रदर्शन और संसाधन सामग्री (Flash cards) इस स्वाध्ययन सामग्री में भी आपको दी जा रही है । आप इन्हे अपनी कक्षा में सीधे उपयोग कर सकते हैं या एक नमूने के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हैं । उम्मीद है कि आपको ऐसे सुझाव मिले होंगे जिन्हें आप उपयोगी पायेंगे और अपनी कक्षा में लागू करने की कोशिश करेंगे ।

3. 6. समावेशी तरीके और प्रणालियाँ

सभी सामान्य शिक्षक कई सरल तरीकों के माध्यम से शिक्षा को समावेशी बना सकते हैं। स्पेशल ट्रेनिंग न होना अध्यापकों को समावेशी शिक्षा की ओर बढ़ने से नहीं रोक सकता। ज़रूरत है तो समावेशी शिक्षा पर विश्वास और उसकी ओर बढ़ने का एक दृढ़ संकल्प ।

आइये, अब कुछ ऐसी मुख्य समावेशी प्रणालियों और तरीकों पर नज़र डालें जो विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों के साथ कक्षा में अन्य छात्रों के सामने आने वाली बाधाओं को हटाने के लिये भी लाभदायक सबित होंगी:

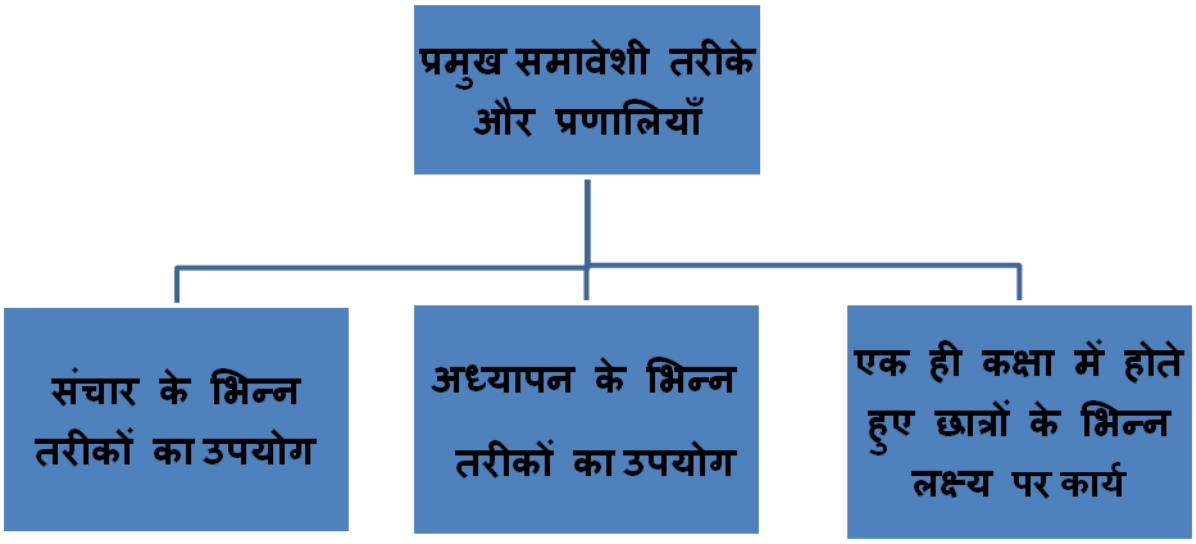

I. बात कहने व समझाने (संवाद) के भिन्न तरीकों का एक साथ उपयोग

- कक्षा में बात करते और शिक्षण के समय भाषा व ब्लैकबोर्ड लेखन के साथ-साथ इशारों और तस्वीरों का प्रयोग करें ।

- जहाँ तक संभव हो सके ठोस वस्तुओं को भी शामिल करें।

- छात्रों को भी अपनी बात कहने के लिये भिन्न माध्यमों का प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित करें ।

<u>यह प्रणाली लाभदायक कैसे होगी?</u>

विभिन्न विधियों के संयोजन से हम सभी छात्रों तक अपनी बात पहुँचा सकेंगे और उन्हें अपनी बात कहने के लिये प्रोत्साहित कर सकेंगे।

- जो बच्चे सुन नहीं सकते उन्हें इशारों और तस्वीरों से फ़ायदा होगा ।
- जो बच्चे पढ़ नहीं सकते वह इशारों ,तस्वीरों, ठोस वस्तुओं और कक्षा में वार्तालाप सुनकर सीख सकते हैं ।
- जो बच्चे देख नहीं सकते उन्हें बोले जाने वाली भाषा और ठोस वस्तुओं से फ़ायदा होगा ।
- जो बच्चे अलग मातृभाषा होने के कारण कक्षा में बोले जाने वाली भाषा नहीं समझते, उन्हें इशारों ,तस्वीरों और ठोस वस्तुओं के होने से बात समझने और समझाने में मदद मिलेगी ।
- कुछ छात्रों के लिये शायद औपचारिक शिक्षा सम्भव न हो । उनके लिये भी इशारों,तस्वीरों और ठोस वस्तुओं से बात समझने और समझाने में मदद मिलेगी ।

2. अध्यापन के भिन्न माध्यमों का उपयोग

छात्रों को पढ़ाने और सिखाने के लिये ब्लैकबोर्ड तथा पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त और माध्यमों का भी आयोजन व इस्तेमाल करें । जैसे :

कक्षा के बाहर वास्तविक स्थितियों के अनुभव

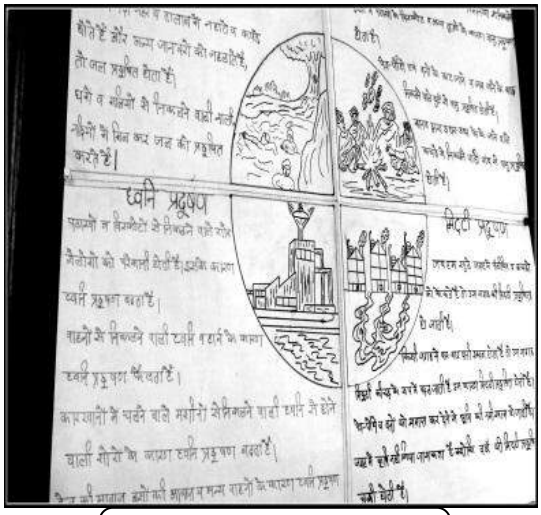

चार्ट तथा मॉडल

विचार विमर्श

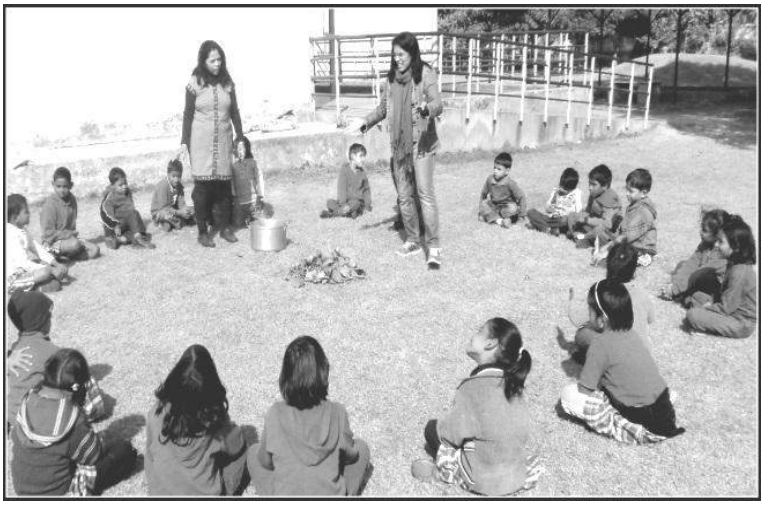

परियोजना कार्य और प्रयोग

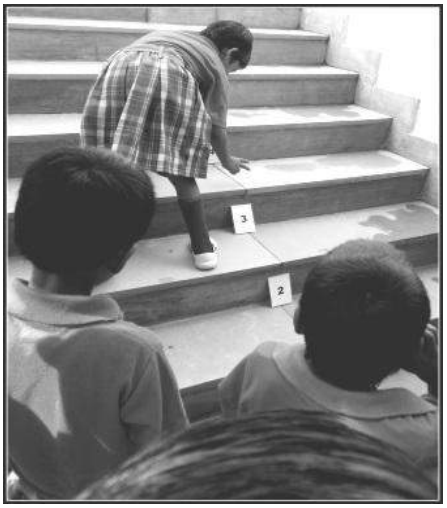

विषयों पर आधारित गतिविधियाँ

ठोस वस्तुएँ

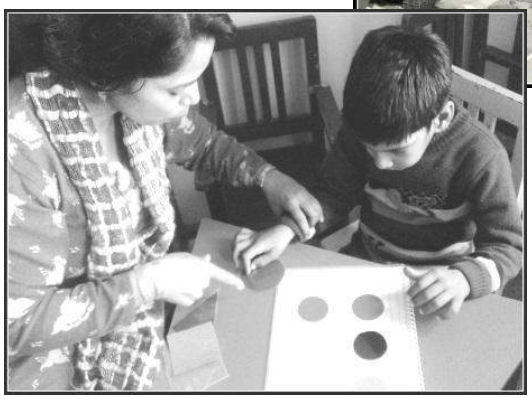

कला के माध्यम से शिक्षण; जैसे संगीत, नृत्य, नाटक, पेंटिंग

यह प्रणाली लाभदायक कैसे होगी

हर व्यक्ति के सीखने का अपना पसंदीदा तरीका होता है-चाहे वह बच्चा हो या बड़ा। किसी के लिये सुनकर सीखना आसन होता है, किसी के लिये देखकर, तो किसी के लिये ठोस वस्तु के साथ वास्तविक अनुभव करना । अध्यापन के भिन्न माध्यमों का उपयोग करने से प्रत्येक छात्र को सीखने का मौका मिलता है । ब्लैकबोर्ड तथा पाठ्य पुस्तक के साथ साथ वह अपने पसंदीदा तरीके का अनुभव करके ज्यादा प्रभावी रूप से सीख सकते हैं ।

II. एक ही कक्षा में होते हुए भी छात्रों के भिन्न लक्ष्य पर कार्य करना

इस बात को मान कर चलें कि एक ही कक्षा में होते हुए भी छात्रों के भिन्न शैक्षिक स्तर होंगे ।

सभी छात्रों से एक ही पाठ्यक्रम पूरा करने की उम्मीद अवास्तविक है । एक कक्षा में सभी छात्रों की आयु चाहे समान हो लेकिन शैक्षिक और भागीदारी के स्तर भिन्न होंगे । इस भिन्नता को ध्यान में रखते हुए ही छात्रों के शैक्षिक और भागीदारी से जुड़े लक्ष्य बनायें ।

यह प्रणाली लाभदायक कैसे होगी?

छात्रों में मौजूद भिन्नता को उनके लक्ष्यों में शामिल करने से वे अपनी उम्र के बाकी छात्रों के साथ रहते हुए भी अपने स्तर और क्षमता के अनुसार सीख सकेंगे ।

कक्षा में शिक्षिका द्वारा विभिन्न समावेशी तरीके और प्रणालियाँ का उपयोग DVD की फिल्म 'छात्रों की विशेष ज़रूरत का ध्यान रखते हुए पढ़ाना' और 'भिन्न शैक्षिक स्तरों का ध्यान रखते हुए छात्रों को पढ़ाना' में प्रदर्शित किया गया है ।

भाग **4.** भिन्न शैक्षिक स्तरों का ध्यान रखते हुए छात्रों को पढ़ाना

स्कूलों में छात्रों की उम्र के अनुसार कक्षा में दाखिला होने का प्रावधान है । छह साल का छात्र कक्षा 1 में भर्ती किया जाता है व सात वर्षीय छात्र को कक्षा 2 में दाखिला दिया जाता है ।

जैसा कि आप जानते हैं, एक सामान्य कक्षा में छात्र विभिन्न वर्गों, अनुभवों, तथा परिस्थिति यों से आते हैं । एक ही कक्षा में होते हुए भी हर छात्र का शैक्षिक स्तर, क्षमता और ज़रूरत अलग हो सकती है । एक उम्र का होते हुए भी सभी छात्रों का एक जैसा शैक्षिक स्तर व क्षमताएँ नहीं होतीं । उदाहरण के लिये- एक दस साल के छात्र से कक्षा 5 का पाठ्यक्रम करने की उम्मीद की जाती है, भले ही वास्तविकता में वह कक्षा 2 के शैक्षिक स्तर पर हो । इसके फलस्वरूप कुछ छात्रों को पाठ समझने तथा कक्षा और ग्रह कार्य पूरा करने में कठिनाई आती है । ऐसे भी कुछ छात्र होते हैं जो पाठ्यक्रम आसानी से समझ व सीख जाते हैं । समावेशी कक्षा में भी यही विविधता अपनाई जाती है और शिक्षक से इन विविधताओं का ध्यान रखते हुए पढ़ाने की आशा की जाती है।

हमारा प्रस्ताव यह बिलकुल नहीं है कि कमतर शैक्षिक स्तर के कारण छात्र को निचली कक्षा में बैठाया जाये। आत्म सम्मान और सामाजिक विकास के लिये यह अनिवार्य है कि छात्र अपनी उम्र के बाकी बच्चों के साथ रहते हुए अपने स्तर और क्षमता के अनुसार सीख सके।

भिन्न शैक्षिक स्तरों का ध्यान रखते हुए सभी छात्रों को एक साथ पढ़ाना संभव है; लेकिन इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षक -

- प्रत्येक छात्र की विभिन्न विषयों में अवलोकन / आंकलन द्वारा असल शैक्षिक स्तर के बारे में जानकारी हसिल करे।
- इस जानकारी को दैनिक पाठ योजना के अंतर्गत शामिल करे।
- भिन्न शैक्षिक स्तरों का ध्यान रखते हुए सभी छात्रों को एक साथ पढ़ाने के लिये दो तरीकों का प्रयोग किया जा सकता है। इन तरीकों का वर्णन अगले कुछ पृष्ठों में किया गया है।
- इस पुस्तिका के साथ दी गयी DVD में फिल्म 'भिन्न शैक्षिक स्तरों का ध्यान रखते हुए छात्रों को पढ़ाना' ध्यान से देखें- यह दोनों तरीके फिल्म में देखे जा सकते हैं।

4. 1. पहला तरीका: कक्षा के छात्रों को शैक्षिक स्तर के अनुसार २ या ३ छोटे समूहों में विभाजित करके पढ़ाना

- शिक्षक पाठ योजना ऐसे प्लान करे जिससे वह हर समूह को बारी बारी से कुछ समय और ज़रूरत के हिसाब से ध्यान दे सकें ।

- एक समूह के साथ काम करने से पहले शिक्षक को बाकी समूहों को ऐसा कार्य देना बेहतर होगा जो कि छात्र स्वतन्त्र रूप से कर पायें । यह इसलिये प्रस्तावित किया गया है ताकि छात्रों का समय प्रभावी ढंग से इस्तेमाल हो ।

- कक्षा में कुछ विशेष ज़रूरतों वाले छात्र हो सकते हैं जिन्हें समझने में कठिनाई होने के कारण अनौपचारिक शिक्षा से ज्यादा लाभ होने की संभावना है- उन छात्रों को औपचारिक शिक्षा की अवधि के दौरान व्यावहारिक गतिविधियों का अभ्यास करा सकते हैं ।

- कक्षा के दौरान यदि कोई स्वयंसेवक, शिक्षा-मित्र / सहायक स्टाफ उपलब्ध है तो कार्यात्मक गतिविधियों के अभ्यास करवाने में उनकी मदद ले सकते हैं । शिक्षा-मित्र या सहायक स्टाफ का प्रबंधन निश्चित रूप से वांछित है ।

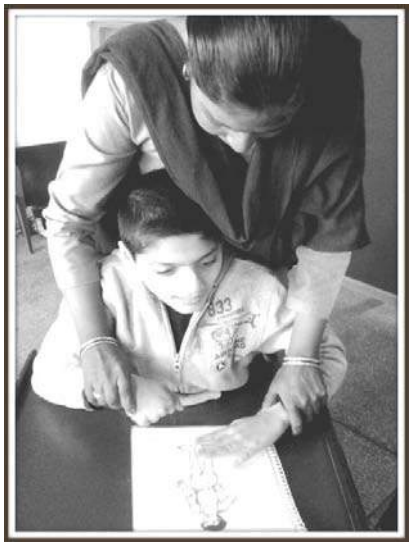

इस बात का ध्यान रखें : यह ज़रूरी नहीं है कि सभी विशेष ज़रूरतों वाले छात्रों को गैर औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता होगी; विशेष ज़रूरतों वाले कई छात्र औपचारिक शिक्षा के माध्यम से भी सीख सकते हैं ।

4. 2. दूसरा तरीका:कक्षा में सभी छात्रों को एक साथ एक ही विषय पढ़ाना परंतु उनके शैक्षिक स्तरों के हिसाब से भिन्न लक्ष्य और अपेक्षा रखना

इस शिक्षण विधि में पूरी कक्षा एक ही विषय सीखती है लेकिन :

- कक्षा में सभी छात्रों से एक जितनी जानकारी ग्रहण करने की अवास्तविक उम्मीद नहीं की जाती । हर छात्र को अपनी क्षमता और समझ के अनुसार जानकारी ग्रहण करने की आज़ादी होती है ।
- शैक्षिक स्तरों के आधार पर छात्रों के लक्ष्य बनाये जाने से वह बेहतर सीख सकते हैं ।
- शिक्षक सभी छात्रों से एक ही तरह के जवाब की उम्मीद नहीं करते, बल्कि छात्रों की समझ, शैक्षिक स्तर और क्षमता के हिसाब से उत्तर की आशा करते हैं। उदाहरण के लिए -
  - कुछ छात्रों से एक शब्द में जवाब देने की उम्मीद की जाती है ।
  - कुछ छात्रों से संकेत, इशारा या तस्वीर के माध्यम से जवाब देने की उम्मीद की जाती है ।
  - कुछ छात्रों से पूर्ण वाक्य में जवाब देने की उम्मीद की जाती है ।

- एक ही विषय पर शिक्षक भिन्न कक्षा कार्य करने को दे सकते हैं

कुछ छात्रों को वर्कशीट में रंग करने का कार्य दे सकते हैं

कुछ छात्रों को वर्कशीट लेबल करने का कार्य दे सकते हैं

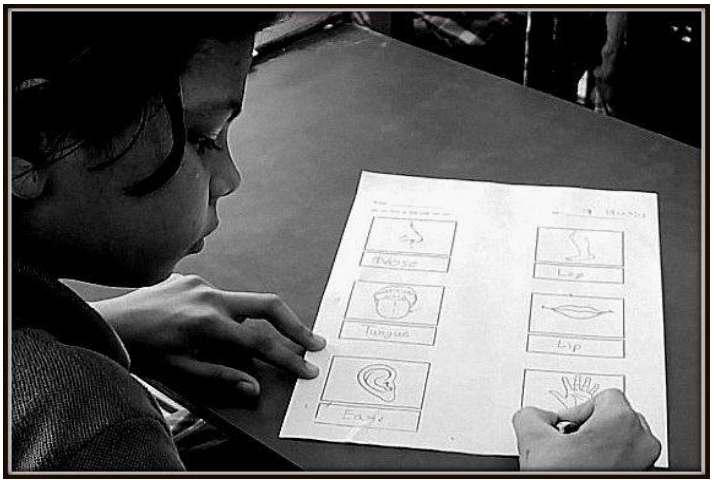

बाकी छात्रों को पूरा वाक्य लिखने और रंग भरने का कार्य दे सकते हैं

साथ दी DVD की फिल्म 'भिन्न शैक्षिक स्तरों का ध्यान रखते हुए छात्रों को पढ़ाना' ध्यान से देखें जहाँ शिक्षिका ने इस योजना को प्रभावी ढंग से लागू किया ।

फिल्म में इस्तेमाल किया गया दैनिक पाठ योजना

पाठ योजना

दिन / तारीख	19-9-13 गुरूवार
विषय (subject)	परिवेश अध्ययन
विषय	शरीर के अंग
शिक्षण पद्धति (मौखिक चर्चा , कार्यकलाप वर्कशीट और ब्लैकबोर्ड पर कार्य)	• मौखिक चर्चा द्वारा टीचर बच्चों से शरीर के अंगों की पहचान तथा उनके कार्य के बारे में पूछेंगी। • छात्रों को भिन्न शैक्षिक स्तरों के अनुसार 3 समूहों में बैठाया जाएगा तथा शैक्षिक स्तर के अनुसार कार्य किया जाएगा। समूह 1 - शरीर के अंगों का puzzle, समूह 2 - वर्कशीट पर शरीर के अंगों में रंग भरना, समूह 3 - वर्कशीट पर शरीर के अंगों की पहचान करना तथा शब्द लिखना।
पाठ के जरूरी एड्स	वर्कशीट (शैक्षिक स्तर के समूह के अनुसार), अंगों का puzzle set
विशेष जरूरतों वाले छात्रों के लिए कुछ आवश्यक एड्स	कक्षा को भिन्न शैक्षिक स्तरों के अनुसार बाँटा जाएगा तथा समूह स्तर के अनुसार वर्कशीट और क्रियाकलाप करेंगे।
होमवर्क / गृहकार्य	समूह 1 और 2 को वर्कशीट दी जाएगी वर्कशीट - शरीर के अंगों को पहचान कर रंग भरो। समूह 3 को अभ्यास वर्कशीट वर्कशीट - शरीर के अंगों को पहचान कर उनके नाम लिखो।
मूल्यांकन (क्लासवर्क और होमवर्क)	छात्रों ने कक्षा में उत्साह के साथ भाग लिया। छात्रों ने शरीर के अंगों के नाम अंग्रेजी में सीखे। कुनाल तथा अनुराग कक्षा समय के दौरान अपनी वर्कशीट पूरी नहीं कर पाए जिस कारण उन्हें वर्कशीट होमवर्क के रूप में दी गई।

अध्यापक का नाम व हस्ताक्षर - सोनिया

उम्मीद है आपको कई ऐसे सुझाव मिले होंगे जिन्हें आप उपयोगी पायेंगे और अपनी कक्षा में लागू करने का प्रयास करेंगे । इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि ऐसा संभव होने के लिए तीन पहलुओं पर समर्थन आवश्यक है:

1) शिक्षक का पहले से पाठ योजना बनाना
2) पाठ योजना के अनुसार संसाधन आयोजित करना
3) आवश्यकता अनुसार शिक्षा-मित्र या सहायक स्टाफ का आयोजन करना

यह बहुत स्पष्ट है कि समावेशी शिक्षा का कोई सरल या छोटा रास्ता नहीं है । कोई भी पुस्तक हमें समावेशी शिक्षा से जुड़े सभी प्रश्नों के उत्तर जो कारगर हों, नहीं दे सकती । ज़रूरी यह है कि हम सभी को अपने पूर्व अनुभवों से जुड़ी धारणाओं को तोड़कर नए अनुभवों का निर्माण करना होगा । इन नए अनुभवों को हमें खुले दिल से अपनाना भी होगा । यह तभी मुमकिन हो सकेगा जब हम अपनी परिस्थितियों को समस्या के नज़रिए से न देखकर उसका समाधान ढूंढें और उसपर सकारात्मकता से काम करें ।

संलग्न

Annexure

A. समावेशी शिक्षा के लिए स्कूल प्रबंधन समिति (SMC) की भूमिका

समावेशी शिक्षा वास्तविकता में संभव करने की ज़िम्मेदारी केवल अध्यापकों की नहीं है। RTE के अंतर्गत एक स्कूल विकास योजना (school development plan) तैयार करना ज़रूरी है ताकि यह कार्य संभव हो सके :

- विशेष ज़रूरत व वंचित छात्रों का स्कूल में दाखिला हो
- स्कूल की ईमारत और परिसर को सभी छात्रों के लिए सहज और सुरक्षित करना । इनमें शामिल है- कक्षा व अन्य कमरे,पीने के पानी वाला क्षेत्र, खेल का मैदान, भोजन कक्ष, शौचालय और गलियारे
- समावेशी तरीकों को लागू करते समय आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए स्टाफ को हर कदम पर समर्थन देना - जैसे:
  - उन्हें प्रोत्साहित करना
  - निरंतर प्रशिक्षण अयोजित करना
  - तैयारी के लिए अतिरिक्त समय निर्धारित करना
  - सामग्री और संसाधनों की व्यवस्था करना
- स्कूल के कार्य की निगरानी

- स्कूल परिसर में स्थानांतरित करने तथा कक्षा में बैठने के लिए छात्रों की ज़रूरत के अनुसार उपकरणों (सहायक सामान), फर्नीचर एव् समतल सतह का आयोजन करना
- स्कूल में आवश्यक स्टाफ और कर्मचारियों का आयोजन करना
- प्राप्त अनुदान के उपयोग की निगरानी
- सही मायने में समावेशी बनने के लिए स्कूल विकास योजना (school development plan) तैयार करने के साथ-साथ SMC को निम्नलिखित कार्यों पर भी ध्यान देना आवश्यक है:
- छात्रों और उनके अभिभावकों के लिए एक सुखद एवं भेदभाव रहित वातावरण बनाना
- मुश्किल व्यक्तिगत परिस्थितियों के बावजूद स्कूल में छात्रों की उपस्थिति और सीखना संभव होना
- सार्थक और उचित शिक्षा के लिए सामान्य स्कूल पाठ्यक्रम, दैनिक पाठ योजना और परीक्षण प्रारूपों (examination formats) में लचीलापन लाना
- माता - पिता की ज़रूरतों और परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए बैठकों तथा कार्यशालाओं का आयोजन करना
- समावेशी शिक्षा प्रक्रिया के सभी स्टेक-धारियों (stakeholders) द्वारा समय समय पर समीक्षा करना और ज़रूरत के अनुसार उनमें बदलाव लाना

एक समावेशी समाज के निर्माण की दिशा में समावेशी शिक्षा एक महत्वपूर्ण कदम है। समावेशी शिक्षा प्रक्रिया में SMC को एक सक्रिय भूमिका निभाने की ज़रूरत है- समाधान का हिस्सा बनकर, समस्या के रूप में नहीं! सामान्य शिक्षक समावेशी शिक्षा को सामान्य स्कूलों में प्रभावी ढंग से लागू कर सकते हैं, बशर्ते कि स्कूल प्रबंधन समिति (SMC) आवश्यक प्रोत्साहन और समर्थन की व्यवस्था करे ।

नि:शक्त व्यक्ति समान अवसर, अधिकार संरक्षण और पूर्ण भागीदारी अधिनियम, 1995 (The persons with disabilities-equal opportunities, protection of rights and full participation Act, 1995) के अनुसार स्कूल विकास योजना (school development plan) अनुदान का 3% हिस्सा विशेष ज़रूरत वाले छात्रों (CWSN) व उनकी शिक्षा के लिये निर्धारित है ।

B.समावेशी दैनिक पाठ योजना लिखने के लिये फार्मेट/ फार्म

अध्याय/ खंड	कक्षा कार्य - शिक्षण विधि	शिक्षण सामग्री	अनुकूलन	गृहकार्य	मूल्यांकन (कक्षा कार्य - गृहकार्य)

c. बाधाओं को दूर करने के तरीके तय करने के लिए फार्मेट/ फार्म

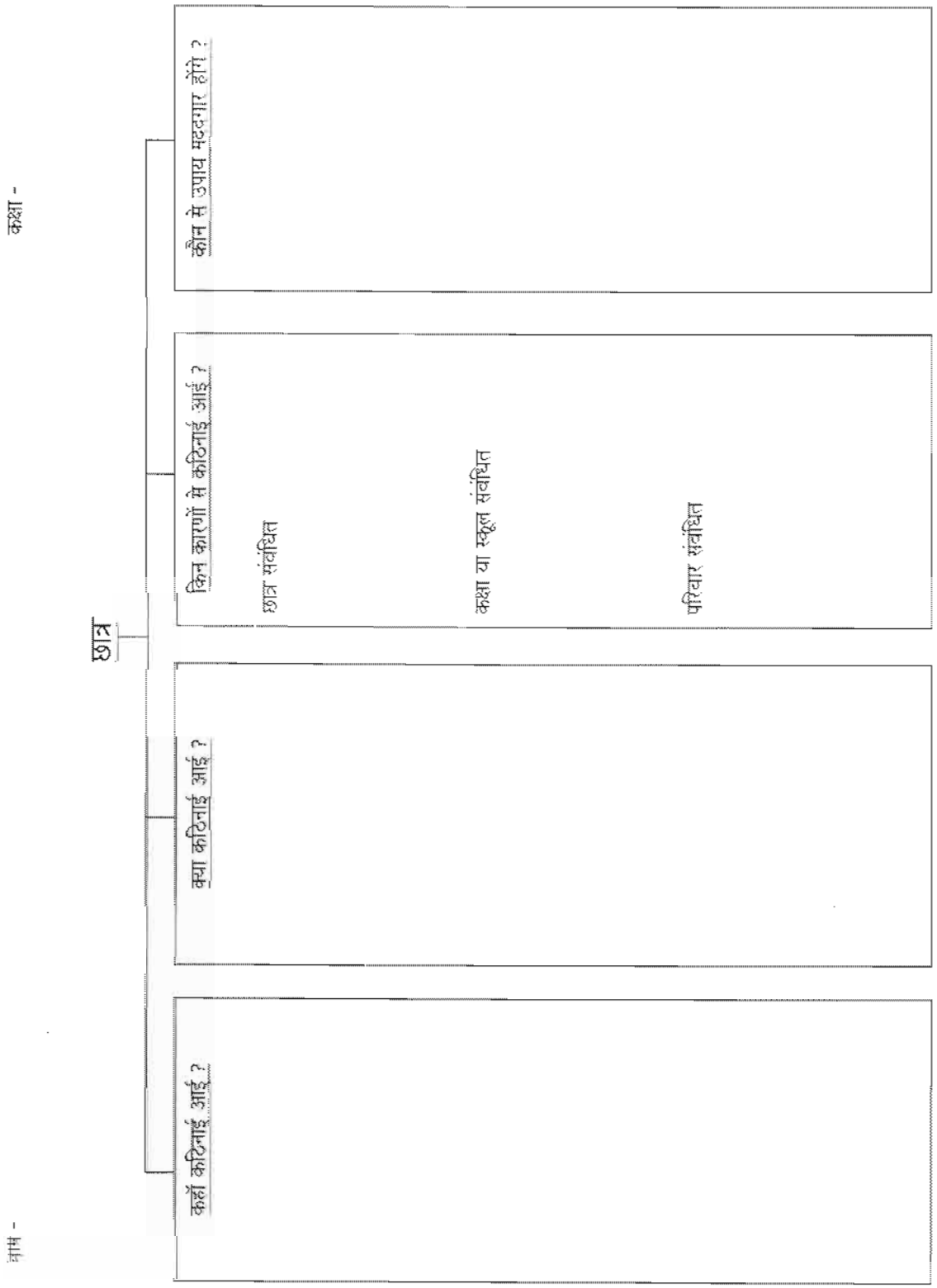

D. 4 March 2014 पंचकुला में विश्वास समावेशी शिक्षा स्वाधययन सामग्री पूर्वालोकन के समय उपस्थित प्रतिभागियों की सूची

	नाम	पद	स्कूल/ ऑफीस का नाम और पता
1.	पंकज अग्रवाल	एस पी डी	HSSPP, Sector – 5,Shiksha Sadan, IED Cell, 6th Floor ,Panchkula
2.	केवल कृष्ण अग्निहोत्री	Addl. Director (NVEQF&TE)	
3.	रजनीश शर्मा	कोओरडीनेटर आई ई डी एस एस	HSSPP, Sector – 5,Shiksha Sadan, IED Cell, 6th Floor ,Panchkula
4.	अमृत	कनसल्टेन्ट आई ई डी एस एस ए	HSSPP, Sector – 5,Shiksha Sadan, IED Cell, 6th Floor ,Panchkula
5.	सुरेन कुमारी	स्पेशल टीचर	I E D MODEL SCHOOL G.G.S.S.S Kharkhoda Distt. Sonepat
6.	स्वाती अहूजा	स्पेशल टीचर	GBSSS , NH-5,,MIT Faridabad Haryana121001
7.	कुमुद शर्मा	रिसोर्स टीचर	GGSSMS Police Line, Ambala city
8.	रोहित कुमार	रिसोर्स टीचर	Govt. Sr. Secondary School Shahabad (M),Kurukshetra
9.	डा सिमरन रनधावा	कनसल्टेन्ट इन डिसिबिलिटी स्टीज़	House no 58, ,Sector 2 Chandigarh- 160001
10.	ए के खन्ना	काउन्सलर	Navuday Sanstha,373, Sector -9 Panchkula
11.	डा संदीप राना	प्रोफेसर	Deptt. Of Applied Psychology G J University of Science and Technology, HISAR Haryana
12.	सतपाल	रिसोर्स टीचर	Govt. Sr Sec Schhool Pillukhera Distt. - Jind
13.	मुकेश अहलावत	स्पेशल टीचर. एस एस ए	Govt. Sr Sec School , Model Town Soniapat (131001)
14.	जितेन्दर शर्मा	स्पेशल टीचर	GSSS Patel Nagar ,Hisar 125001
15.	रेनू बाला	स्पेशल टीचर आई ई डीएस एस (आई)	Govt.IED Model School ,Gohana Distt. Sonepat 131301
16.	अनिल कुमार	जे बी टी टीचर	Govt. Primary School Chandana, Kaithal
17.	संतोष कुमारी	कक्षा अध्यापिका	Govt. Girls Secondary School Sector 15, Panchkula

18.	सुमिता	साईन्स मिस्ट्रस	Govt. Girls Secondary School Sector 15,,Panchakula
19.	मंजूला रानी	हेड टीचर	GPS Central Jail,Ambala 1
20.	उत्तमजीत कौर	लेक्चरार पंजाबी	Govt. Sr. Sec School Shahabad (M) KKR
21.	अरूण कुमार कैहरबा	लेक्चरार हिंदी	GSSS, Patehra,Block- Indri Distt. Karnal
22.	अशोक कुमार	जे बी टी टीचर	G.S.S.S Madhlauda,Pnipat
23.	सुभाष चंद	हेड टीचर	Govt. Primary School Chhaprion Block –Indri,Karnal
24.	पंकज खोसला	एस एस मास्टर	Govt. Sr Sec School , Padla,Kaithal
25.	रूपिंदर कौर	हिंदी टीचर	Govt. Sr. Sec School .Shahabad (CM) KKR
26.	चित्रा यादव	लेक्चरार केमेस्ट्री	G.G.M.S.S.S Ballabgarh ,Faridabad
27.	राकेश बूरा	प्रिंसीपल बी आर टी (आई ई एस)	Govt. Sr. Sec School ,Madlanda, Panipat
28.	जगबीर सिंह	लेक्चरार अंग्रेजी	Govt. girls Sr.Sec School Model Town Rohtak
29.	ऊमा	प्रिंसीपल	G.S.S.S Siwan Distt.Kaithal S.code 2171
30.	कृष्ण कुमार	लेक्चरार	G.S.S.S .M.T,SNP
31.	श्याम सुंदर	लेक्चरार	G.S.S.S Model Town ,Sonipat
32.	जयबीर सोनी	जे बी टी टीचर	Govt. Primary School ,Payal, Hisar
33.	खेम लाल सैनी	विज्ञान टीचर	G.M.S.S.S Mustafabad Distt. Yamuna Nagar
34.	परवेसली कुमार	जे बी टी टीचर	G.G.M.S.S.S BLB,Faridabad
35.	एस पी चावला	असिसटेंट प्रोजेक्ट कोओडिनेटर	District Project Coordinator
36.	संजय गर्ग	हेड मास्टर	Govt. High School ,Rasulpur – 239 Distt. Yamunanagar
37.	सिरिल्स क्लेरविन	रिसोर्स टीचर	IED Cell, Head quarter, Shiksha Sadan, Panchkula
38.	ईरा वाल्टन	लोकल कोओडिनेटर	The Deaf Way Foundation 501/E-11 GH79,Sector 20 PKL

E. विश्वास स्टाफ:योगदान कर्ताओं की सूची

1.	प्रज्ञा सिंह
2.	अजीत कुमार सिन्हा
3.	गुरुचरन कौर
4.	निवेदिता पांडे
5.	सपना थापा
6.	संध्या दादा
7.	मेघा जुनेजा
8.	दिपाली वालिया
9.	नीलम बिश्नोई
10.	रुचि गुप्ता
11.	नूपुर छाबरा
12.	रेहाना ख़ानम
13.	सोनिया गोयल
14.	मोनिका मेहरौलिया
15.	मोनिका गुप्ता
16.	राजेश कुमार शर्मा
17.	ऋतिका वाधवा
18.	भारती श्रीवास्तव
19.	शैलजा मेदुरी

नोट्स

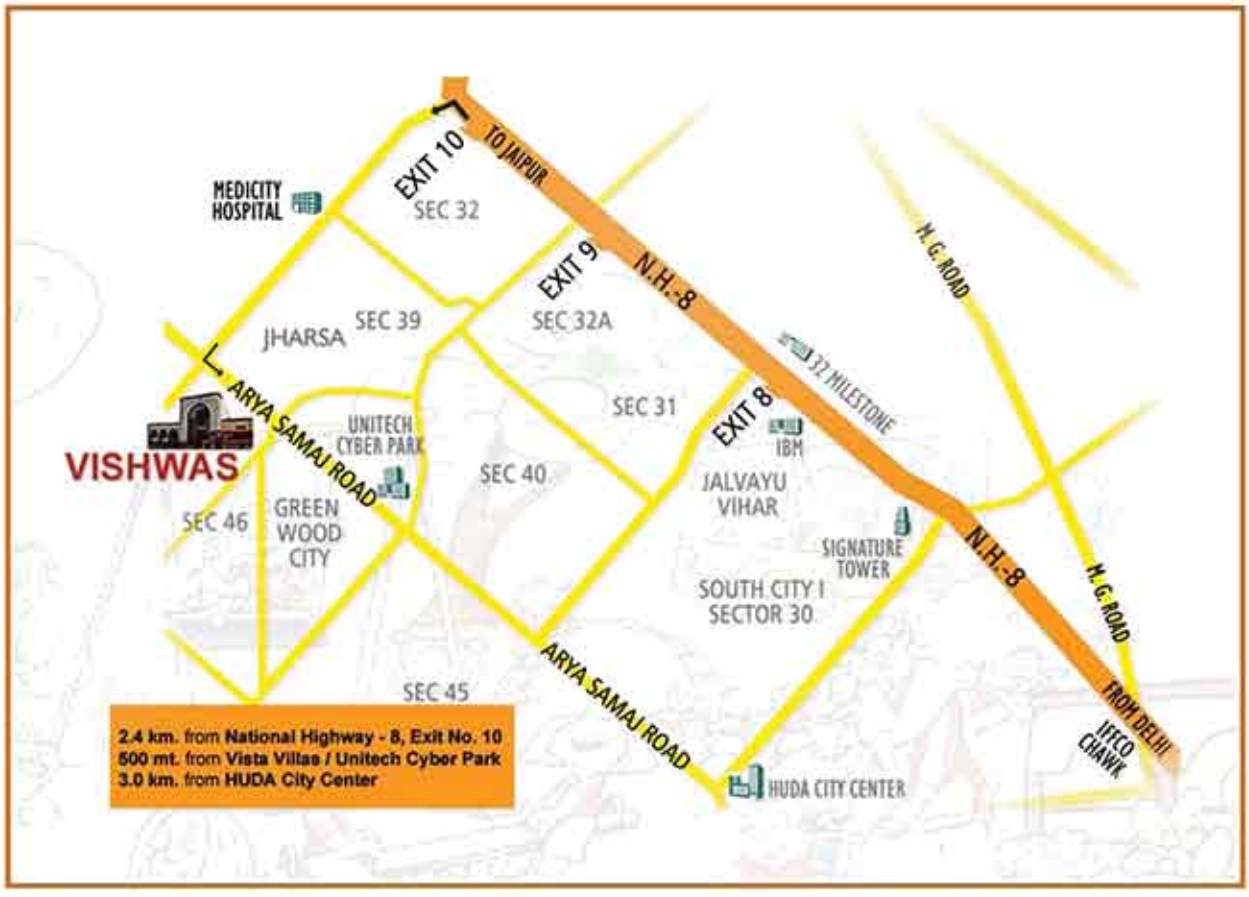

विश्वास

vishwas

Vision for Health Welfare and Special Needs

सेक्टर 46 आर्य समाज रोड

यूनिटेक साइबर पार्क के पास

गुड़गांव 122002

फोन+91-124-2580323

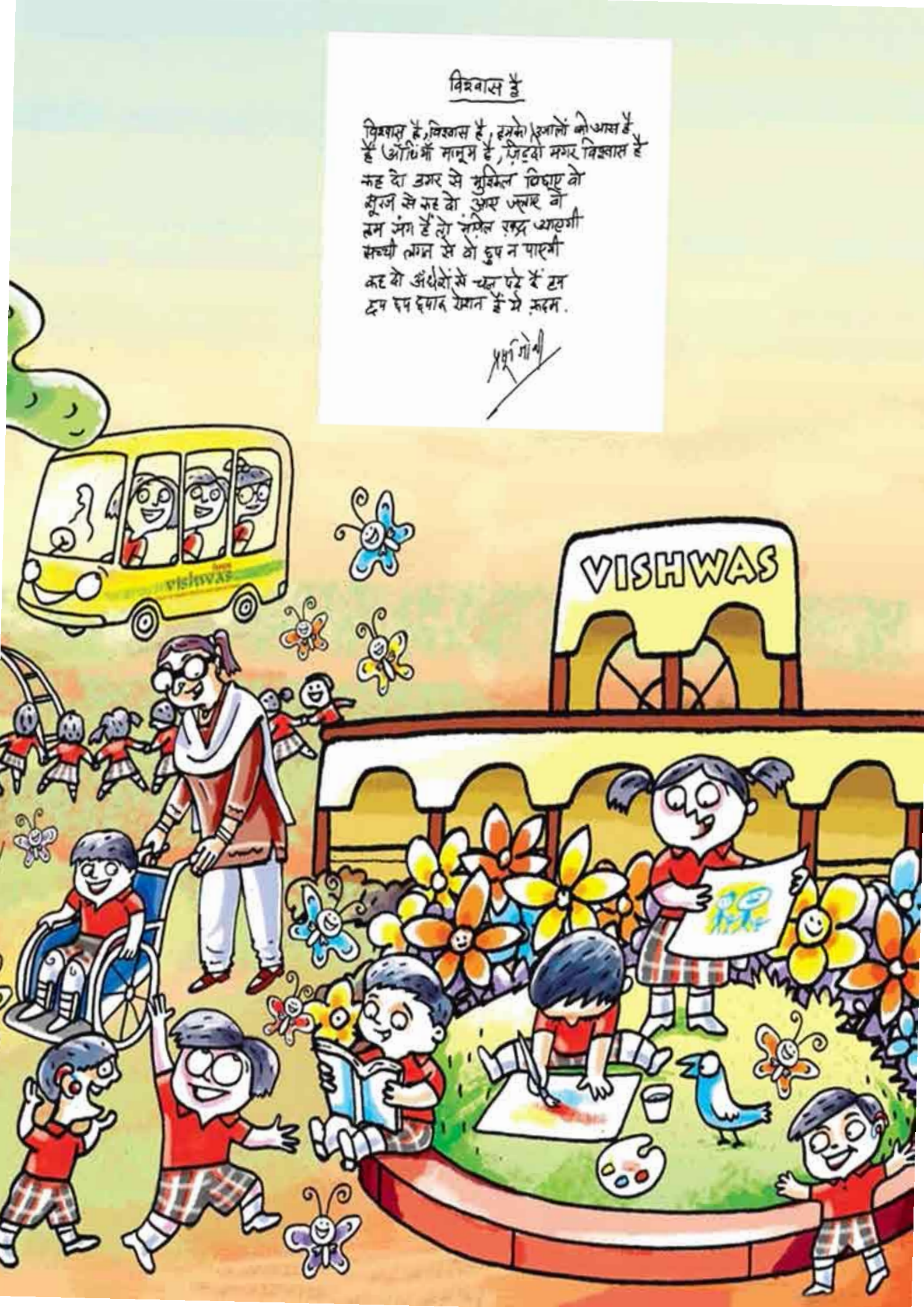

विश्वास है

विश्वास है, विश्वास है, हमको उजालों की आस है
हैं आँधियाँ मालूम है, ज़िंदगी मगर विश्वास है

कह दो डगर से मुश्किल बिछाए वो
सूरज से कह दो आए ज़रूर वो
हम संग हैं तो मंज़िल ख़ुद आएगी
सच्ची लगन से वो छुप न पाएगी

कह दो अंधेरों से चल पड़े हैं हम
दम दम दमार रोशन हैं ये क़दम.

प्रसून जोशी